699

कर्मकाण्ड दीपक

कर्मकाण्ड दीपक

(घरियुक ब्रह्मुण)

पुस्तकालय
(सं.गा.वना शा. द. क.द्र)
क्रमांक ......699......

प्रकाशकः

प्रेमनाथ शास्त्री

मूल्य : 40/-

सर्वाधिकार सुरक्षित
कृष्णम् वन्दे जगत् गुरुम्
विजयेश्वर पंचांग कार्यालय

विषय सूची

विषय	पृष्ट
धूपदीप	5–9
विष्णुपूजन	10–19
प्रेप्युन	19–24
शिवपूजा	25–35
दिवचक्षीर पूजा	36–39
यक्षामावसी पूजा	40–42
जन्मदिन पूजा	43–47
बुनियाद मकान पूजा	48–55
ग्रह प्रवेश पूजा	56–62
दीपमाला पूजा	63–66
श्राद्ध संकल्प विधि	67–70
पंचगव्य बनाने की विधि	71–73
पन्नपूजा विधि	73–78
पन्नकथा	78–81
रुद्रमन्त्र	82–94
चमानुवाक्य	94–100

हमारी पुस्तकें मिलेंगी

KASHMIRI SAMITI
Kashmir Bhawan Marg, Amar Colony, Lajpat Nagar-IV, New Delhi, Ph. : 6433399, 6465280

TANEJA ELECTRONICS & TENT HOUSE
Kashmiri Catering & Decurators Raghunath Mandir, Amar Colony, Lajpat Nagar, New Delhi
Phone : 6429046

BRAHAM PUTRA COMPLEX
Shop No. 45, Sector-29, NOIDA Ph. : 8539338

D. P. B. PUBLICATIONS
110, Chowk Barshahbulla, Chawri Bazar, Delhi-6
Phone : 3273220

VIJAYASHWAR DHARMIK PUSTAK BHANDAR
Talab-Tilo, Jammu, Phone : 555763

J. K. BOOK SHOP
Talab-Tilo, Jammu, Phone : 554522

VEER HOUSE
Sarwal Chowk, Jammu

GUPTA STATIONERY STORE
City Chowk, Jammu

NAND LAL & SONS
Pacca Danga, Jammu

TRINITY STATIONERS
Pacca Danga, Jammu

KIRAN STATIONERY STORE
Gandhi Nagar, Jammu

AMAR STATIONERY STORE
Gandhi Nagar, Jammu

SANJAY STATIONERY STORE
Rehadi, Jammu

BHARAT PUSHTKALYA
Jewel Chowk, Jammu

VIRENDER BOOK STALL
Canal Road, Jammu

AJU BOOK CENTER
Gandhi Nagar, Jammu

UNIVERSAL NEWS AGENCIES
Mukherjee Bazar, Udhampur

धूपदीप विधिः

(हर एक पूजा में उपयोगी)

कटोरी से थाली अथवा किसी पात्र में जल की धारा डालते हुये पढ़ेः-

अस्य श्री आसन-शोधन-मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ-ऋषिःसुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन-शोधने विनियोगः।।

पृथिवीमाता को तिलक पुष्प चावल चढाते हुये पढेंः-

प्रीं पृथिव्यै आधार-शक्त्यै समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः, दोनों हाथ जोड़ कर पढ़ेः- **पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विषणुना धृता त्वं-च धारय मां देवि पवित्रं कुरु-चासनम्।।**

दर्भ के दो तिनके दोनों अंगुलियों में रख कर गणेश जी का ध्यान करके नमस्कार करते हुये पढ़ेः- **शुक्लाम्बर-धरं विष्णुं शशिवर्णं चतभुर्जम्। प्रसन्न वदनं ध्याये, सर्व-विघ्नोप-शान्तये। अभि-प्रीतार्थ-सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैर्- अपि सर्व-विघ्न-छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः।।**

गुरुः ब्रह्मा, गुरुः विष्णुः, गुरुः साक्षात् महेश्वरः, गुरुर्-एव जगत्-सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः, परम-गुरवे

नमः, परमेष्ठिने गुरवे नमः, परमाचार्याय नमः, आदि सिद्धिभ्यो नमः ।

अंगन्यास :- गायत्री मन्त्र का न्यास करने के लिये दो दर्भ के तिनके दोनों अनामिका अंगुलियों में पीछे की ओर मुड कर रखिये, फिर दोनों हाथों की अंगुलियों से नाभि को स्पर्श करते हुये पढ़ें:-

ॐ "अ" नाभौ, "ऊ" हृदि (हृदयको) **"म" शिरसि** (सिर को) **"ॐ भूः" पादयोः** (पांवो को) **"ॐ भुवः" हृदि** (हृदयको) **"ॐ स्वः" शिरसि** (सिर को) **"ॐ भूः" अंगुष्ठाभ्यां नमः** (अंगूठों को) **"ॐ भूवः" तर्जनीभ्यां नमः** (तर्जनी को) **"ॐ स्वः" मध्यमाभ्यां नमः** (मध्यमा को) **"ॐ महः" अनामिकाभ्यां नमः** (अनामिका को) **"ॐ जनः" कनिष्ठि-काभ्यां नमः** (कनिष्ठा को) **"ॐ तपःसत्यं" करतल-कर पृष्ठाभ्यां नमः** (दोनों हथेलियों को) **"ॐ भू पादयोः"** (दोनों पावों को) **"ॐ भुवः जान्वोः"** (दोनों गुठनों को) **"ॐ स्वःगुह्ये"** (गृह्यस्थान को) **"ॐ महःनाभौ"** (नाभि को) **"ॐ जनःहृादि"** (हृदय को) **"ॐ तपःकण्ठे"** (कण्ठ को) **"ॐ सत्यं शिरसि"** (सिर को) **"ॐ भूःहृदयाय नमः"** (हृदय को) **"ॐभुवः शिरसि स्वाहा"** (सिर को) **"ॐ स्वः शिखायै वषट्"** (चोटी को) **"ॐ महःकवचाय हुम्"** (वस्त्रों को) **"ॐ जनः नेत्राभ्यां वौषट्"** (नेत्रों को) **"ॐ तपः सत्यम्-अस्त्राय-फट्"** (चुटकी मारकर) आगे भी ऊपर की भांति अंगुष्ठ आदि को स्पर्श करते हुये पढ़ें:

"ॐ तत्-सवितुर्" अंगुष्ठाभ्यां नमः, "वरेण्यं" तर्जनीभ्यां नमः, "भर्गो देवस्य" मध्यमाभ्यां नमः, "धीमहि" अनामिकाभ्यां नमः, "धियो यो नः" कनिष्ठिकाभ्यां नमः, "प्रचोदयात्" करतल-कर पृष्ठाभ्यां नमः, "ॐ तत्-पादयोः" "सवितुर्" जान्वोः "वरेण्यं" कट्याम्, "भर्गो" नाभौ, "देवस्य" हृदये, "धीमहि" कण्ठे, "धियो" - नासिकायां, "यः" चक्षुषोः "नः" ललाटे, प्रचोदयात् शिरसि। "ॐ तत्-सवितुर्" हृदयाय नमः, "वरेण्यं" शिरसे स्वाहा, "भर्गो देवस्य" शिखायै वषट्, धीमहि कवचाय हुं, धियो योनः नेत्राभ्यां वौषट् "प्रचोदयात्" अस्त्राय फट्, "ॐ आपः" स्तनयोः (स्तनो को) **"ज्योतिः" नेत्रयोः, "रसो" मुखे" "अमृतं" ललाटे** (माथे को) **ब्रह्म-भूर् भुवः स्वरोम्** (शिरसि) **अंगन्यास समाप्त।**

चारों ओर तिल फैंकते हुये पढ़ेः- **अपसर्पन्तु ते भूता, ये भूता भुवि-संस्थिताः, ये भूता विघ्न-कर्तारस्ते नशन्तु शिवाज्ञया** प्राणायाम करके हृदय को जल से छिड़कते हुये पढ़ेः- **तीर्थे स्नेयं तीर्थम्-एव, समाननां भवति, मानः शंसो अररुषो धूर्तिः प्राणड्-मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।** अनामिका अंगुली में पवित्र धारण करते हुये पढ़ेः- **वसोः पवित्रम् असि शतधारं वसूनां पवत्रिम्-असि, सहस्र-धारम्, अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला**

भवन्तीः । यजमान को तिलक लगाते हुये पढ़ें:- **मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु, पूर्णाः सन्तु- मनोरथाः, शत्रूणां बुद्धि-नाशोस्तु, मित्राणाम् -उदयस्तव, आयुर्-आरोग्यम्-ऐश्वर्यम्-एतत्-त्रितयम्-अस्तु-ते, जीव त्वं शरदः शतम् ।** अपने आप को तिलक लगाते हुये पढ़ें:- **परमात्माने पुरुषोत्तमाय पंच-भूतात्मकाय विश्वात्मने मंत्र-नाथाय, आत्मने नारायणाय-आधार-शक्त्यै, समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः** दीप को तिलक पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें:- **स्वप्रकाशो महादीपः सर्वत-स्तिमि-रापहः प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः** धूप को तिलक पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें:- **वनस्पति रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्-तमः आधारः सर्वदेवानां धूपोऽयं परिकल्पितः ।** सूर्य भगवान् को तिलक पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें:- **नमो धर्म-निधानाय नमः स्वकृत-साक्षिणे, नमः प्रत्यक्ष-देवाय भास्कराय नमो नमः** कटोरी से थाली में जल की धारा डालते हुये पढ़ें:- **यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः-भ्रातापि नो यत्र सुहृत्-जनश्च, न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्म-दीपं शरणं प्रपद्ये आत्मने नारायणाय-आधार-शक्तयै, दीप-धूप संकल्पात्-सिद्धिर-अस्तु, दीपो नमः धूपो नमः** "अपसव्येन" बायाँ यज्ञोपवीत रख कर कटोरी से थाली में तिल साहित जल की धारा डालते हुये पढ़ें:- **नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो, नमो धर्माय विष्णवे ।**

नमो यमाय रुद्राय-कान्तार पतये नमः । मास, पक्ष, तिथि, वार का नाम लेकर तपर्ण करें, तपर्ण करते समय यदि माताजी जीवित हूँ तो उनका नाम न लेकर पढ़ें:- **पित्रे पितामहाय प्रपितामहाय, मात्रे पितामह्यै प्रपितामह्यै । मातामहाय प्रमातामहाय वृद्ध-प्रमाता महाय। मातामह्यै-प्रमाता मह्यै वृद्ध-प्रमातामह्यै। समस्त-माता-पितृम्यो द्वादश-दैवतेभ्यः पितृभ्यो दीपः स्वधा, धूपः स्वधा।**

नोटः (प्रत्येक पूजा में काम आने वाला दीप धूप समाप्त)

विष्णु पूजन अथवा सत्यनारायण पूजा

"सव्येन" दायाँ यज्ञोपवीत रख कर जल से भरी कटोरी में विष्टर, दर्भ के दो तिनके तिलक और तीन फूल डालते हुये पढ़े:- **सं वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टास्तन्वः सन्तु वः, संसृष्टः प्राणो अस्तु वः, सं-यावः प्रियाः तन्वः, संप्रिया हृदयनि वः। आत्मा वो अस्तु सं प्रियः सं प्रियः तन्वो मम।** अब इसी जल से विष्णु भगवान् को छिड़कते हुये जीवादान करें और पढ़ें:- **अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव, मित्राव-रुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। बृहस्पतेः प्राणः स-ते प्राणं ददातु तेन जीव, भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी-सहिताय नारायणाय जीवदानं परिकल्पयामि नमः।** चावल के दाने सहित दर्भ के दो तिनके दायें हाथ में सीधे पकड़ कर तीन तीन बार पढ़ें:- **ॐ भूः पुरुषम्-आवाहयामि नमः ॐ भुवः पुरुषं-आवाहयामि नमः ॐ भूर्भवः स्वः पुरुषम्-आवाहयामि नमः ॐ वासुदेवाय विद्महे, लक्ष्मी नारायणाय धीमहि, तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् 131 ॐ तत्-सत् ब्रह्म-अद्य-तावत्-तिथौ अद्य** (मास पक्ष तिथि का नाम लेकर पढ़ें) **भगवतः वासुदेवस्य लक्ष्मी-सहितस्य नारायणस्य अर्चाम्-अहं करिष्ये-ॐ कुरुष्व।** तिल सर्षप, जब चारों ओर फैंक कर दो-दो दर्भ के तिनके आसन के रूप में डालते हुये पढ़ें:- **भगवतः वासुदेवस्य**

लक्ष्मी-सहितस्य नारायणस्य इदम्- आसनं नमः, अब चावल सहित दो दर्भ के तिनके हाथ में लेकर देवता के आवाहन के निमित पढिये:- **भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी-साहिताय नारायणाय युष्मान् वः पूजयामि ॐ पूजय,** दर्भ के दो तिनके हाथ में ही रख कर चावल कन्दों से फेंक कर नये चावल के दाने हाथ में रख कर पढिये:- **सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्र-पात्। सभूमिं विश्वतो वृत्वा-अत्य-तिष्ठत्-दशांगुलम्, भगवन्तं वासुदेवं-लक्ष्मी-सहितं नारायणं आवाह-यिष्यामि ॐ आवाहय** हाथ में रखे हुये दर्भ के दो तिनके और चावल के दाने कन्दों से फैंककर भगवान् पर फूल चढ़ाते हुये पढ़े :- **माला-धरा-च्युत विभो परमात्म-मूर्ते सर्वज्ञ नाथ परमेश्वर सर्व-शक्ते। आगच्छ में कुरु दयां प्रतिमां भजस्व, पूजां गृहाण मत्-अनुग्रह-कामयाद्य** निम्नलिखित श्लोक तीन बार पढ़ते हुये फूल चढाये :- **भगवन्-पुण्डरीकाक्ष भक्तानु-ग्रह कारक, अस्मत्-दयानु-रोधेन-सन्निधानं कुरु प्रभो** 131 ऊपर लिखित श्लोक तीन बार फिर से पढ़ें:- **इत्याहूय तु गायत्रीं त्रिः समुच्चार्य तत्व-वित्, मनसा चिन्तितै-र्द्रव्यै-र्देवम्-आत्मनि पूजयेत्। तेजोरूपं ततः क्षिप्त्वा प्रतिमायां पुन-र्यजेत्।** जव के दानेकंदो से फैंक के प्राणायाम करके कटोरी का पानी हाथ से वापस कटोरी में डालते हुये पढ़ें:- **पाद्यार्थम्-उदकं नमः। शन्नो देवीर्-अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंय्योर्-अभि स्रवन्तु नः।** उस कटोरी के पानी में डालें:- लाय तिलक सर्वौषधि विष्ठर तथा जल यह पाँच

द्रव्य पाद्य कहलाते हैं पढिये:- **लाजाश्च कुंकुमं चैव सर्वौषधि-समन्वितम् दर्भाकुरं जलं चैव पंचांगं पाद्यलक्षणम्,** पाँवों धोने के लिये यह कटोरी हाथ में रख कर पढ़ें:- **भगवन्तः पाद्यम् पाद्यम्, एता-वानस्य महिमातो ज्या-यांश्च-पूरुषः। पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या-मृतं दिवि (1) हिरण्य-वर्णाः शुचयः पावका यासु जातः कश्यपो यासु-इन्द्रः, या अग्निं गर्भ दधिरे विरूपाः-ता न आपः शंस्यो ना भवन्तु 121 भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी-सहिताय नारायणाय पाद्यं नमः। पाद्य-शेषं निवारयेत्।** कटोरी में से पाद्य का शेष छोड़कर कटोरी में ही हाथ से पानी वापस डालते हुये पढ़े:- **शन्नो देवीर्-अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये। शंय्योर्-अभि-स्रवन्तु नः,** उसी कटोरी में फिर से डालें - पानी, दूध, विष्टर, घी, दही, चावल, जव और सर्षप ये आठद्रव्य अर्घ्य कहलाता है। पढिये:- **आपः क्षीरं कुशा-ग्राणि घृतं च दधि तण्डुलाः। यवाः सिद्धार्थ-काश्चेति ह्य-र्घ्यम्-अष्टांगम्-उच्यते,** यह आठ द्रव्यों वाली कटोरी हाथ में लेकर पढिये:- **अध्यर्म्-अध्यर्म्** हाथ मुँह धोने के निमित फूल अथवा विष्टर से छींटे देते हुये पढ़ें:- **त्रिपात्-ऊर्ध्व-उदैत् पुरुषः पादोस्येहा-भवत् पुनः। ततो विश्वं व्याक्रामत्-साशना-नशने-अभि। आपो हिष्ठा मयोभुवाः-तान ऊर्जे दधातन महे रणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसः तस्य भाजयते-हनः। उशतीर्-इव मातरः। तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय**

जिन्वथ। आपो जनयथा चनः भगवन्-वासुदेव लक्ष्मी सहित नारायण इदं वः - अर्घ्यं नमः फिर थोड़ा सा जल अपर्ण करते हुये पढ़ेः- **तस्मात्-विराड्-अजायत विराजो अधिपूरुषः। सजातो अतिरिच्यत, पश्चात् भूमिम्-अथो पुरः। शन्न आपो धन्वन्याः। शन्नः सन्त्वनूप्याः। शन्नः समुद्रिया न आपः, शमुनः सन्तु कूप्याः भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी-सहिताय नारायणय आचमनीयं नमः,** फिर से स्नान करते हुये पढ़ेः- **यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञम्-अतन्वत, वसन्तो अस्या सीत्-आज्यं ग्रीष्म इध्मः शरत्-हविः इति मन्त्रस्नानीयं नमः।** अब पानी दूध, दही, घी, शहद, जव, शक्कर, सर्षप, तिल, स्वर्णपानी, करपूर, धूप, लाजा, अखरोट, फूल और सर्वौषधि पात्र में इकट्ठे करके विष्णु भगवान् को स्नान कीजियेः- **तत्-विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति, सूरयः दिवीव चक्षुर-आततम्। तत्-विप्रासो विपन्यवो, जागृवांसः समिन्धते, विष्णो-र्यत् परमं पदम्। भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी-सहिताय नारायणाय षोडशस्नानि नमः।** तपर्ण कीजिये **'ब्रह्मा तृप्यतां ॐ नमो देवेभ्यः,** गले में यज्ञोपवीत रख कर, **स्वाहा, ऋषिभ्यः** बायाँ यज्ञोपवीत रख कर **स्वधा पितृभ्यः,** दायाँ यज्ञोपवीत रख कर **आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं जगत् तृप्यतु तृप्यतु तृप्यतु एवम् अस्तु।** फिर पढेंः- **ॐ तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव-चक्षुर-आतमम्। तत् विप्रासो विपन्यवो जागृ-वांसः समन्धिते, विष्णो-र्यत्-परमं पदम् भगवते**

वासुदेवाय लक्ष्मी-सहिताय नारायणाय मन्त्रगुडकं परिकल्पयामि-नमः बायें हाथ के बीच में चावल के दाने और पानी रख कर देवताओं की आलत निकाल कर कन्धे पर से फैंकते हुये पढ़ें:- **ॐ प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणीहि विश्वतः प्रति। यातु धानस्य रक्षसो बलं विरुज वीयर्म्** अब शलिग्राम के चरणों का पानी आँखों पर मलते हुये पढ़ें:- **ता वां वास्तु-न्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृंगा-अयासः। अत्राह तत् उरुगायस्य वृष्णः परमं पदं-अव-भाति भूरि।** घण्टा बजाते हुये शालीग्राम पर जल की धारा डालते हुये पढ़ें :- **ॐ तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुर-आततम् तत् विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते, विष्णो-र्यत्-परमं पदम् भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी सहिताय नारायणाय चरणामृत्तं गृह्णामि नमः।** इसी जल से अपने सिर को छिड़कते हुये पढ़ें:- **आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता-न ऊर्जे दधातन, महे रणाय चक्षसे, योवः शिवतमो रसः-तस्य भाजयते हनः, उशातीर्-इव-मातरः, तस्मा-अरंग माम-वो यस्य क्षयाय जिन्वथ, आपोजनयथा च नः** अब जिस स्थान पर शालिग्राम को रखना हो उस स्थान पर फूल बिछाते हुये पढ़ें :- **आसनाय नमः, गरुडासनाय नमः, किं-आसनं ते गरुडासनाय किं भूषणं कौस्तुभ-भूषणाय लक्ष्मी-कलत्राय किम्-अस्ति देयं वागीश किं-ते वचनीयम्-अस्ति,** वस्त्र के रूप में फूल डालते हुये पढ़ें:- **युवा-सुवासाः परिवीत आगात् स उच्छ्रेयान् भवति**

जायमानः, तन्धीरासः कवय उन्नयन्ति, साध्यो मनसा देवयन्तः भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी-सहिताय नारायणाय

वस्त्र यज्ञोपवीत अपर्ण करते हुये अथवा फूल अपर्ण करते हुये पढ़ेः-

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते-र्यत्-सहजं पुरुस्तात्, आयुष्यम्-अग्र्यम् प्रति मुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलम्-अस्तु तेजः। यज्ञापेपवीतम्-असि, यज्ञस्येत्वा, उपवीतेन उपनह्यामि भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी-सहिताय नारायणाय यज्ञोपवीतं अर्पयामि नमः। तिलक लगाते हुये पढेंः- **गन्ध द्वारां दुरा-धर्षा नित्यपुष्टां करीषिणीम् ईश्वरीं सर्वभूतानां ताम्-इहोपह्वये श्रियम्। भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी सहिताय नारायण समालभनं गन्धो नमः,** (अक्षत) फूल चढ़ाते हुये पढ़ेः- **पुष्पवतीः, प्रसुमतीः फलिनीर्-अफला वत। अश्वा इव सजित्वरीर्-वीरुधः पार-यिष्णवः, भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी सहिताय नारायणाय अर्घो नमः पुष्पं नमः** धूप चढ़ाते हुये पढ़े :- **धूर्-असि धूर्व धूर्वन्तं योस्मान्-धूर्वति-तं धूर्वय, वयं धूवार्मःतंच धूर्व। देवानाम्-असि वहनितमं सस्नि-तमं पप्रितमं इष्टतमं विष्णोः क्रमो-स्या-हुतम्-असि हवि-र्दानं दृंहस्व म्वाहान्-मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रेक्ष उरुत्वा वाताय, वसवस्त्वा, धूपयन्तु गायत्रेण छन्दसांगिर-स्वत्। रुद्रास्त्वा धूपयन्तु त्रैष्टु-भेन छन्दसांगि-रस्वत्, आदित्यास्वा धूपयन्तु जागतेन छन्दसां-गिरस्वत्, विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा धूपयन्तु**

आनुष्टुभेन छन्द-सांगि-रस्वत्, इन्द्रस्त्वा धूपयतु, वरुणस्त्वा धूपयतु विष्णुसत्वा धूपयतु भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी-सहिताय नारायणाय धूपं परिकल्पयामि नमः, रत्नदीप चढ़ाते हुये पढ़ेः- ब्राह्मणोस्य मुखम्-आसीत्-बाहू राजन्यः कृतः। ऊरु तत्-अस्य यत् वैश्यः पद्-भ्यां शूद्रो-अजायत। तेजोसि-शुक्रम्-असि-ज्योतिर्-असि धामासि प्रियं देवानाम्-अनादृष्टं देव-यजनं दूवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृहणामि देवेभ्यस्त्वा यज्ञेभ्यो गृहणामि भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी-सहिताय नारायणाय रत्नदीपं परि-कल्पयामि नमः। खडे होकर चामर कीजिये - जयनारायण जन्त्री पर देखिये। यह स्तुति पढ़ कर पढ़िये:- भगवते वासुदेवाय चामरं परि-कल्पयामि नमः। छत्र के रूप में फूल चढाते हुये पढ़ें:- काण्डात्-काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नोदूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च भगवते वासुदेवाय छत्रं परिकल्पयामि नमः। आईना दिखाते हुये पढ़ेः- तत्-चक्षु-र्देवहितं पुरस्तात् शुक्रम्-उच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं भगवते वासुदेवाय आदर्श परिकल्पयामि नमः। तपर्ण करते हुये पढ़ें:- एताभ्यो देवताभ्यो दीपो नमः धूपो नमः भगवतो वासुदेवस्य-अर्घ्य-दानाद्य-चर्नविधिः सर्व परिपूर्णोऽस्तु। कटोरी में दूध, घी, शक्कर, दही, शहद, इकट्टे डालकर मधुपर्क अपर्ण कीजिये और पढ़ें :- चन्द्रमा मनसो जातः चक्षो सूर्यो अजायत, मुखात्-इन्द्रश्च-अग्निश्च प्राणात्-वायुर्-अजायत

भगवते वासुदेवाय नारायणाय मात्रा-मधुपर्कं चरुं निवेद-यामि नमः पुष्पांजलि अपर्ण करते हुये पढ़ें:- नाभ्या आसीद्-अन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत पदभ्यां भूमि-र्दिशः श्रोत्रात्-तथा लोकान्-अकल्पयत्-भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी सहिताय नारायणाय कुसुमांजलिं सर्मपयामि नमः मन में चार परिक्रमा कीजिये और पढ़ें:- सप्तास्यासन्-परि धयः त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यत् यज्ञं तन्वाना आबधनन् - पुरुषम् पशुम्। ॐ नमो, नारायणाय भगवन् प्रसीद, इति चत्वार प्रदक्षिणानि।

विष्णु भगवन् पर फूल चढाते हुए निम्नलिखित आठ श्लोक पढें:-

वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ध्येयं सदा परिभवघ्नम्-अभीष्टदोहं-तीर्थास्पदं-शिव-विरिञ्चि-नुतं- शरण्यम्। भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं-वन्दे महापुरुष ते चरणार-विन्दम्। त्यक्त्वा सुदुस्त्यज-सुरेप्सित-राज्यलक्ष्मीं धर्मिष्ठ-आर्यवचसा- यत्-अगात्-अरण्यम्। माया मृगं दयित-येप्सितम्- अनुधावत्-वन्दे महापुरुष-ते चरणार-विन्दम्। श्रीमत्-सरोरुह-यवाङ. कुश-चक्र-चाप-मत्स्यांकितं नव-विल्लोहित- पल्ल-वाभम्। लक्ष्म्या-लयं परम-मंगलम्- आत्मरूपं वन्दे महापुरुष ते चरणार विन्दम्। वृन्दावनान्तरम्-अगात्-अनुगोकुलानां संचार्य सर्वपशुभिः स्वविवृद्ध-कामी। संचिन्तयत्-अगगुरो-र्मृगपक्षिणां-यत् वन्दे महापुरुष तेचरणार-विन्दम्। यत्-गोपिका विरहजाग्नि-

परीत-देहा:- तप्तस्तनेषु विजहु: परिरभ्य तापम्। रासे तदीय कुच-कुंकुम-पंकलिप्तं वन्दे महापुरुष ते चरणार विन्दम्। कालीय-मस्तक- विघटन-दक्षम्-अस्य, मोक्षेप्सुभि-विर्रह-दीन मुखाभिर्- आरात्। तत् पत्निभि: स्तुतम्-अशेष निकाम रूपं, वन्दे महापुरुष ते चरणार बिन्दम्। ज्ञानालयं श्रुति- विमृग्यं- अनादिं-अर्च्यं, ब्रह्मादिभि-र्हृदि विचिन्त्यम्- अगाध बो धै:। संसार-कूप-पतितो-त्तारणाव-लम्बं वन्दे-महापुरुष ते चरणार-बिन्दम्। येनांक-बालवपुषस्तनपान-बुद्धे-स्त्वत-अँघ्रिणा- हृतम्- अनोविपरीतचक्रम्। विध्वस्त-भाण्डम्-अपतत्- भुवि-गोपमूर्ते-वन्दे महापुरुष ते चरणार विन्दम्। इत्यष्टकं पठति-य: परमस्य पुंसो नारायणस्य निरयार्णव-तारणस्य। सर्वाप्तिम्-आशु हृदये कुरुते मनुष्य: संप्राप्य देहविलयं लभते च मोक्षम्।।

प्रणाम करते हुये पढें:- **उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा मनसा नमस्कारं करोमि नम:** जलधारा कटोरी में डाल कर अंजलि धारण करते हुये पढ़ें:- **अन्नं नम: अन्नं नम:, आज्यम्-आज्यं-अद्यदिने अद्य-यथा संकल्पात्-सिद्धिर-अस्तु अन्नहीनं क्रियाहीनं-विधिहीनं द्रव्यहीनं मंत्रहीनं च यत्-गतं-सर्वम्-अछिद्रं सम्पूर्णम् अस्तु-एवम्-अस्तु।** कटोरी का थोड़ा सा पानी हाथ में डाल कर फिर से कटोरी में डालते हुये पढ़ें:- **शन्नो देवीर्-अभिष्टये-आपो**

भवन्तु पीतये, शंय्योर्-अभि-स्रवन्तु नः, कटोरी का पानी शालिग्राम को अपर्ण करते हुये पढ़ें :- **भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी-सहिताय नारायणाय अपोशानं नमः आचमनीयं नमः ।** कटोरी से हाथ में पानी डाल कर फिर से कटोरी में वापस डालकर कटोरी में कुछ सिक्के दक्षिणा के रूप में डालते हुये पढ़ें:- **भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी-सहिताय नारायणाय दक्षिणायै तिल-हिरण्य-रजत-निष्कर्णं ददानि,** और भी सिक्के डालते हुये पढ़े:- **एता देवताः सदक्षिणा-न्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु** अब नैवेद्य जो कुछ भी हो भगवान् के सामने लाकर नैवेद्य की थाली को सभी परिवार वाले स्पर्श करते हुये प्रेप्युन पढिये:-

प्रेप्युन नैवेद्यमन्त्राः

अमृतेश-मुद्रया-अमृतीकृत्य-अमृतम्-अस्तु-अमृतायतां नैवेद्यम् । सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे-श्विनो-र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्-आददे महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्म विष्णु महेश्वर-देवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतु- पतये-नारायणाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निष्वात्ता-दिभ्यः पितृगणदेवता-भ्यः । भगवते वासुदेवाय संकर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सत्याय पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय सहस्र-नाम्ने विष्णवे लक्ष्मी-सहिताय नारायणाय । भवाय देवाय शर्वाय-देवाय, रुद्राय-देवाय पशुपतये

देवाय उग्राय देवाय भीमाय देवाय महादेवाय ईशानाय-देवाय ईश्वराय देवाय उमा-सहिताय-शिवाय-पार्वती सहिताय परमेश्वराय। विनायकाय एकदन्ताय कृष्ण-पिंगलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्ष्याय वल्लभासहिताय श्रीमहागणेशाय। क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूर-वाहनाय सेनाधि-पतये कुमाराय भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय अन-श्वाय-एका-श्वाय, नीलाष्वाय प्रत्यक्ष-देवाय परमार्थ-साराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय-आदित्याय। भगवत्यै आमयै कामायै चार्वग्यै टंकधरिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री-शरिकाभगवत्यै-व्रीडा-भगवत्यै श्री महाराज्ञी- भगवत्यै ज्वाला-भगवत्यै व्रीडा-भगवत्यै वैखरी-भगवत्यै वितस्ता-भगवत्यै गंगा भगवत्यै यमुना-भगवत्यै कालिका भगवत्यै सिद्ध-लक्ष्म्यै महात्रिपुर-सुन्दर्यै सहस्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै अभंयकरी-देव्यै क्षेमं-करी-भगवत्यै सर्व-शत्रु-घातिन्यै इह राष्ट्राधिपतये-आनन्देश्वर-भैखाय इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्ति-हस्ताय, यमाय दण्ड-हस्ताय नैऋतये खड्गहस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजहस्ताय कुवेराय गदा-हस्ताय ईशानाय त्रिशूल-हस्ताय, ब्रह्मणे पद्महस्ताय विष्णवे चक्र-हस्ताय अनन्तादिभ्यः अष्टाभ्यः कुल-नाग देवताभ्यः अग्न्या-दित्याभ्यां वरुण-चन्द्रमोभ्यां

कुमार-भौमाभ्यां विष्णु बुधाभ्यां इन्द्रा बृहस्पतिभ्यां सरस्वती शुक्राभ्यां प्रजापति शनैश्चराभ्यां गणपति-राहुभ्यां रूद्र-केतुभ्यां ब्रह्म-ध्रुवाभ्यां अनन्ता-गस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूमार्य ध्रुवाय अनन्ताय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिखादिभ्यः पंच-चत्वा-रिशंत्-वास्तोष्पति-याग देवताभ्यः ब्राह्मादिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्यो मातृभ्यः ललिता-दिभ्यो मातृभ्यः दुर्गा-क्षेत्र-गणेश्वर-देवताभ्यः राका देवताभ्यः त्रिका देवताभ्यः सिनीवाली देवताभ्यः यामी देवताभ्यः रौद्री देवताभ्यः वारुणी देवताभ्यः ब्रार्हस्पत्य देवताभ्यः ॐ भू देवताभ्यः ॐ भुवो देवताभ्यः ॐ स्व र्देवताभ्यः रौद्री देवताभ्यः ॐ भूर्भुव स्वर्देवताभ्यः अखण्ड-ब्रह्माणड-याग देवताभ्यः धूर्म्यः उपधर्म्यः महगायत्रै सावित्र्यै सर-स्वत्यै हेर-कादिभ्यो वटुकादिभ्यः। उत्पन्नम्-अमृतं दिव्यं प्राक्-क्षीरो दधि मन्थनात् अन्नम्-अमृत रूपेण नैवेद्यं प्रति-गृह्यताम्।

विष्णु भगवान् का ध्यान करके पढें:- शान्ताकारं भुजग-शयनं, मद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगन सदृशं, मेघवर्णं शुभांगम्-लक्ष्मी-कान्तं कमलनयनं योगिभि-र्ध्यान-गम्यं, वन्दे विष्णुं भव-भय-हरं, सर्व-लोकैक-नाथम्।।

तत्-सत्-ब्रह्म-अद्य-तावत्-तिथौ-अद्य-अमुक मासस्य अमुक पक्षस्य तिथौ अमुकायां-आत्मनो-वांग-मनः कायोपार्जित-पाप निवारणार्थं-सर्व-कामना सिद्धयर्थं, ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः, चुटू को स्पर्श करते हुये

पढ़ें:- **या काचित् योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा परा। खेचरी भूचरी रामा तुष्टा-भवन्तु मे सदा, आकाश-मातृभ्य: अन्नं नम:** अंगूठे से तिलक लगाते हुये पढ़ें:- **आकाश मातृभ्य: समालभनं गन्धो नम: अर्घो नम: पुष्पं नम:** एक और (म्यची) अथवा पूड़ी आदि के टुकड़े को स्पर्श करते हुए पढ़ें:- **इष्टदेवाय पायसं मोदकान् पक्वान्नं मिष्टानं समर्पयामि नम:** एक और म्यची या पूडी आदि के भाग पर पानी डालते हुये पढ़ें:- **योस्मिन,-निवसति-क्षेत्रे क्षेत्रपाल: सकिंकर: तस्मै निवेद-याम्यद्य बलिं पानीय-संयुतम् क्षां-क्षेत्राधिपतये-अन्नं नम:, रां राष्ट्राधिपतये-अन्नं नम: सर्वा: भय-वर-प्रदो मयि पुष्टिं पुष्टिपति-र्दधातु।** इष्ट देवता को फूल चावल (अक्षत) चढ़ाते हुये पढ़ें:- **आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वा-वस्थासु सर्वदा भगवन्-त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्।** नमस्कार करते हुये पढ़ें:- **उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा मनसा च नमस्कारं करोमि नम:।** तर्पण करते हुये अथवा कटोरी से पानी की धारा डालते हुये पढ़ें:- **नमो ब्रह्मणे नमो अस्तु अग्नये, नम: पृथिव्यै नम औषधिभ्य:, नमोवाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे बृहते कृणोमि इति-एतासाम्-एव देवतानां सार्ष्टिं सायुज्यं सलोकतां सामीप्यं आप्नोति य एवं विद्वान्-स्वाध्यायम्-अधीते।।** इति नैवेद्यमन्त्रा:

प्रप्योन करके देवताओं को फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:- **ॐ तत्-विष्णु: परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरय:। दिवीव चक्षुर-आततम्। तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांस:**

समिन्धते, विष्णो-यत् परमं पदम् ।

देवताओं के विसर्जन के निमित्त चावल साहित दो दर्भ के तिनके हाथ में पकड़ते हुये पढ़ें:- **ॐ भूः पुरुषं विसर्जयामि नमः, ॐ भुवः पुरुषं-विसर्जयामि नमः, ॐ स्वः पुरुषं विसर्जयामि नमः, ॐ भूर्भवः स्वः पुरुषं विसर्जयामि नमः, । 3 । वासुदेवाय विद्महे लक्ष्मी नारायणाय धीमही तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् । 3 । तत्-सत्-ब्रह्म-अद्य-तावत्, तिथौ-अद्य** मास-तिथि वार का नाम ले कर पढ़ें:- **भवगतः वासुदेवस्य लक्ष्मीसहितस्य नारायणस्य पूजनम्-अछिद्रं सम्पूर्णम्-अस्तु एवम्-अस्तु ।** जव सहित पानी से तपर्ण करते हुये पढ़ें:- **एताभ्यो देवताभ्यः यवोदकं नमः उदकतर्पण नमः । आज्ञा मे दीयतां नाथ नैवेद्यस्यास्य भक्षणे शरीर-यात्रा-सिद्धय्र्थं भगवन्-क्षन्तुम्-अर्हसि । आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा, भगवन्-त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम् । यत-बाल्ये यत्-च-कौमारे यत् यौवने कृतं मया वयः परिणतौ यत्-च यत्-च जन्मान्तरेषु च कर्मणा मनसा वाचा, यत पापं समुपार्जितम् तत्-नारायण गोविन्द क्षमस्व गरुढ ध्वज । यत्-अक्षर-पद भ्रष्टं-मात्राहीनं च यत्-गतम्, मया दासेन विज्ञप्तं-क्षम्यतां-परमेश्वर ।** प्रणाम करते हुये पढ़ें:- **उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः ।** तपर्ण करते हुये पढ़ें:- **नमो ब्रह्मणे नमो अस्तु-अग्नये, नमः पृथिव्यै नम औषधीभ्यः, नमो वाचे, नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे**

बृहते कृणोमि, इति एतासां-एव देवतानां सार्ष्टितां सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्-आप्नोति य एवं विद्वान् स्वध्यायम्-अधीते । अब चरणोदक (चरणामृत) की कटोरी सामने ला कर, कटोरी के जल में से चरणामृत के रूप में निर्माल्य में थोड़ा सा जल डालते हुये पढ़ें:- **बलि, बिर्भीषणो भीष्मः प्रह्लादो नारदः ध्रुवः षडेते वैष्णव-श्रेष्ठा गृह्णन्तु चरणोदकम् । बाण-रावण चण्डीश-नन्दि- भृंगि-रिट्यादयः पंचैते शाम्भवश्रेष्ठा गृहणन्तु चरणोदकम् । ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च सोमः शुक्रः पुरन्दरः । शाक्ताः षड् इति संप्रोक्ता-गृहणन्तु चरणोदकम् ।** अब चरणामृत में से देवताओं पितरों को भी अपर्ण करते हुये पढ़ें:- **ॐ नमो देवेभ्यः,** गले में यज्ञोपवीत रख कर **स्वाहा ऋषिभ्यः** बायाँ यज्ञोपवीत रख कर **स्वधापितृभ्यः** दायाँ यज्ञोपवीत रख कर **आब्रह्म-स्तम्ब-पर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं जगत् तृप्यतु तृप्यतु तृप्यतु ।** अब शालिग्राम में थोड़े से पुष्प उठा कर सूँघ कर निर्माल्य में डाले और पढ़ें:- **पूजितोसि मया भक्त्या भगवन्-कमलापते सलक्ष्मीको मम स्वांतं विश विश्रान्त हेतवे ।** पहले स्वयं चरणमृत पी लीजिये-सरसों का दाना जितने में डूबे उतना चरणमृत पुरुष दाँई हथेली के मध्य में ले के इसी हाथ के नीचे बायां हाथ रखने के अचामन की भांति शब्द के बिना पी लीजिये । स्त्री को पात्र में पीना चाहिये, चरणामृत पीते समय पढ़ें :- **अकाल-मृत्यु-हरणं सर्व-व्याधि-निवारणम् । विष्णु- पादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते । (ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः) ।**

शिवपूजा

दीप धूप समाप्त करके, पानी की कटोरी में तीन पुष्प और तिलक डालते हुये पढ़ें:- **सं वः सृजामि हृदयं, संसृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्ट-स्तन्वः सन्तु वः, संसृष्टः प्राणो अस्तु वः। संयावः प्रिया-स्तन्वः, सं प्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो अस्तु सं प्रियः, संप्रियस्तन्वो मम।** इसी पानी से भगवान् शंकर को छिड़कते हुये जीवनदान देते हुये पढ़ें:- **अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव मित्रावरुणयोः प्राणस्तौते प्राणं दत्तां तेन जीव। बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणं ददातु तेन जीव। भगवते भवाय देवाय उमा सहिताय शिवाय जीवादानं परिकल्पयामि नमः, "ॐ नमः शिवाय"** इस षड्अक्षर मन्त्र से दर्भ के दो तिनकों से देवताओं को चामर की भांति अंगन्यास कीजिये।

"ॐ" अंगुष्ठाभ्यां नमः, "न" तर्जनीभ्यां नमः "मः" मध्याभ्यां नमः "शि" अनामिकाभ्यां नमः "वा" कनिष्ठकाभ्यां नमः "य" करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः। "ॐ हृदयाय नमः" "न" शिरसे स्वाहा "मः" शिखायै वौषट् "शि" कवचाय हुँ "वा" नेत्रत्रयाय वौषट् "य" अस्त्राय फट् (दीप धूप करते समय भी गायत्री के अंगन्यास के पश्चात् यह **ॐ नमः शिवाय** मंत्र का अंगन्यास अवश्य करें)

चावल सहित दर्भ के दो काण्ड सीधे हाथ में पकड़ कर पढें:- **तन्महेशाय विद्महे, वाक्-विशुद्धाय धीमहि तन्नः**

शिवः प्रचोदयात् । तीन बार पढ़कर फिर आगे पढियें:- **तत्-सत् ब्रह्म-अद्य-तिथौ-अद्य** मास-पक्ष-वार का नाम लेकर पढें:- **भवस्य देवस्य शर्वस्य देवस्य रुद्रस्य देवस्य पशुपते-दर्वेस्य उग्रस्य देवस्य भीमस्य देवस्य महादेवस्य ईशानस्य देवस्य पार्वती-सहितस्य परमेश्वरस्य-अचार्म्-अहं-करिष्ये ॐ कुरुष्व** तिल सर्षप जव के दाने कन्धों पर से फेंककर भगवान् शंकर के सामने आसन के रूप में एक-एक नाम के साथ दो दो दर्भकाण्ड डालते जाये और पढें :- **विश्वेश्वर महादेव राजराजे-श्वरे-श्वर। आसनं दिव्यम् ईशान दास्ये-हं परमेश्वर भवस्य देवस्य शर्वस्यदेवस्य रुद्रस्य देवस्य पशुपते-देवस्य पार्वती सहितस्य परमेश्वस्य इदम्-आसनं नमः** चावल सहित दो दर्भकाण्ड अंगलियों में सीधे रख कर पूजा के लिये भगवान् शंकर से प्रार्थना करें:- **भवायदवाय उमासहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय यष्मान् वः पूजयामि ॐ पूजय** केवल चावल कन्धों से फैंक कर पहले के दो दर्भकाण्डों के साथ नये चावल के दाने पकड़ कर पढें:- **भवं देवं शर्व देवं रुद्रं देवं पशुपतिं देवं उग्रदेवं भीमं महादेवं ईशानं देवं पार्वती सहितं परमेश्वरं आवाहश्यिामि ॐ आवाहय,** चावल के दानों को कन्धों से फैंक कर दर्भकाण्ड निर्माल्य में डाल कर पढें:- **आयाहि भगवन् शम्भो ! सर्वेश गिरि जापते। प्रसन्नो भव देवेश नमस्तुभ्यं हि शंकर। लिंगेत्र भक्त-दयया क्षणमात्रम्- एकं स्थानं विधाय भव मत् विहितां पुरारे सर्वेश विश्वमय हृत्-कमलाधि-रूढ**

पूजां गृहाण भगवन्-भव मेद्य तुष्टः। भूमे-जलात्-तु पवनात्-अनलात्-हिमांशोर्-उष्णांशुतो-हृदयतो गगनात्-समेत्य। लिंगेत्र सन्मणिमये मत्-अनुग्रहार्थं, भक्त्यैक-लभ्य भगवन् कुरु सन्निधानम्। भगवन् पार्वतीनाथ भक्तानुग्रह-कारक, अस्मत्-दयानुरोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो। इत्याहूय तु गायत्रीं त्रिः समुच्चार्य तत्ववित् मनसा चिन्तितै-र्द्रव्यै-र्देवम्-आत्मनि पूजयेत्। तेजोरूपं ततः क्षिप्त्वा प्रतिमायां पुनर्-यजेत्। प्राणयाम करके, **पाद्यार्थ उदकं नमः** कटोरी में से पानी हाथ में डाल कर कटोरी में ही वापस डालते हुये पढ़ें:- **शन्नो देवीर्-अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये, शंय्योर्-अभि-स्रवन्तु, नः,** कवली में यह चीजें डालें, **लाजाच कुकुंमं-चैव सर्वौषधि-समन्वितम्। दर्भांकुरं जलं चैव पंचांगं पाद्य लक्षणम्।** पाँवों धोने के लिये यही कटोरी हाथ में पकड़ कर पढ़ें:- **भगवन्तः पाद्यं पाद्यम्। महादेव मेहशान महानन्द परात्-पर गृहाण पाद्यं मत्-दंत्त पार्वती-सहितेश्वर** जल डालते हुये पढ़ें:- **भवाय देवाय उमासहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय पाद्यं नमः।** कटोरी में से पाद्य का शेष छोड़कर कटोरी में हाथ से पानी वापस डालते हुये पढ़ें:- **शन्नो देवीर-अभिष्टये आपो भवन्तु पीतये-शंय्योर्-अभिस्रवन्तु नः** उसी कटोरी में ये वस्तुयें डालें:- पानी, दूध विष्टर, घी, दही, चावल, जव और सर्षप ये आठद्रव्य अर्घ्य कहलाते हैं पढिये:- **आपः क्षीरं कुशा-ग्राणि घृतं च दधि तुण्डलाः। यवाः सिद्धार्थ-काश्चेति ह्यर्घ्यम्-**

अष्टागं उच्यते यह आठ द्रव्यों वाली कटोरी हाथ में लेकर पढियें:- **"अर्घ्यम्-अर्घ्यम्"** छीटें देते हुये पढें:- **त्र्यम्बकेश सदाधार विपदां प्रतिघातक, अर्घ्यं गृहाण देवेश सम्पत्-सर्वार्थ-साधक। भवदेव शर्वदेव रुद्रदेव पशुपते देव उग्रदेव महादेव ईशानदेव पार्वती सहित परमेश्वर इदं वोऽर्घ्यं नमः,** आचमन के लिये जल अपर्ण करते हुये पढ़ें:- **त्रिपुरान्तक दीनार्त्तिनाश श्रीकण्ठ-तुष्टये। गृहाण-आचमनं देव, पवित्रो-दक कल्पितम्।। भवायदेवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय आचमनीयं नमः,** फिर से स्नान के लिये जलधारा डालते हुये पढ़ें:- **त्रिकाल-काल कालेश संहार करणोद्यत, स्नानं तीर्थाहृतै-स्तोयै-गृहाण परमेश्वर। भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय मन्त्रस्नानीयं नमः।** अब पन्द्रह द्रव्यों से भगवान् शिव को स्नान कीजिए। जल, दूध, दही, घी, शहद, शकर, (गन्ना) सर्वौषधि, धान्य, फूल, सर्षप, धान चान्दनादि, सोना, **पानीयान्त-रितैः पयोधि-घृतै-क्षौद्रे-क्षुभिः सौषधै-र्ब्रीह्यादभिः कुसुमोदकैः फूल जलैः सिद्धार्थ-लाजोदकैः। गन्धादभिः शुभेहम रत्न-सलिलैर्: इत्थं सदा चोत्तमै-र्दद्यात्-पंचदशा-म्बुना सह महा-स्नानि शम्भोः क्रमात्।** ऊपर लिखित द्रव्यों वाली जलधारा भगवान् शिव पर डालते हुये पढ़ें:-

अंसख्यताः सहस्राणि ये रुद्रा, अधि भूम्याम्-तेषां सहस्र-योजनेव धन्वानि तन्मसि (1) येस्मिन्-महत्यणर्वे-अन्तरिक्षे भवा-अधि, तेषां सहस्र योजनेव

धन्वानि तन्मसि (2) ये नीलग्रीवा: शितिकण्ठा दिवं रुद्रा उपाश्रिता: तेषां सहस्र योजनेव धन्वानि तन्मसि, (3) ये नीलग्रीवा: शितिकण्ठा शर्वा अध: क्षमाचरा: तेषां सहस्र योजनेव धन्वानितन्मसि (4) ये वनेषु शशिपिंजरा नीलग्रीवा विलोहिता: तेषां सहस. (5) ये-अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु विपतो जनान्। तेषां (6) ये भूतानाम्-अधिपतयो, विशिखास: कपर्दिन:। तेषां. (7) ये पथीनां पथि रक्षय ऐडमृदाय व्युध: तेषां. (8) य एतावन्तो वा भूयांसो वा दिशो रुद्रा वितिष्ठरे तेषां. (9) ॐ नमो अस्तु रुद्रोभ्यो ये दिवि येषां वर्षम्-इषव-स्तेभ्यो दश, प्राची-र्दश, दक्षिणादश, प्रतीची-र्दश, उदीची-दश-अहवी-स्तेभ्यो नमो-अस्तु तेनो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्बे दधामि ।1। ॐ नमो अस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे, येषां वात इषव-स्तेभ्यो, दश, प्रात्तो-र्दश, दक्षिणा दश, प्रतीची र्दश, उदीची दश, अहर्वा-स्तेम्यो, नमो-अस्तु, तेनो मृडयन्तु, ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दधामि भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय-देवाय, भीमाय देवाय, महादेवाय, ईशानाय देवाय, पार्वती सहिताय-परमेश्वराय, पंचदश-स्नानि ॐ नमो देवेभ्य: कण्ठोपवीती गले में यज्ञोपवीत रख कर **स्वाहा ऋषिभ्य:,** बायाँ यज्ञोपवीत रख कर, **स्वधापितृभ्य:** दायाँ यज्ञोपवीत रख कर, **आब्रह्म-**

स्तम्ब-पर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचंर जगत् तृप्यतु एवम्-अस्तु । कटोरी में से थोड़ा पानी लेकर उस को हाथ में रख कर सात बार पढ़ें:- **ॐ नमः शिवाय** इस मन्त्र से मन्त्रित करके भगवान् शिव पर जल डालिये, यह मन्त्र गुडक कहलाता है । बाँई हथेली के मध्य में थोड़ा सा जल तथा चावल के दाने लेकर, हाथ की तर्जनी उँगली और अगूठे के सिरों से चावल पकड़ कर इस को भगवान् के सिर से घूमा कर जल और चावलों को बायें कन्धें पर से फैंके- (यह आलत कहलाती है ।) आलत निकालते हुये पढें:- **गृह्णन्तु भगवत्-भक्ता भूताः प्रासाद-बाह्यगाः, पंचभूताश्च ये भूता, स्तेषाम् अनुचराश्चये, ते तृप्यन्तु वौषट्,** भगवान् शिव के पादों का जल नेत्रों को मलते हुये पढें:- **भगस्य हृदयं लिंगं, लिंगस्य हृदयं भगः, तस्मे भग-लिंगाय उमारु-द्राय वै नमः ।** भगवान् को जहाँ बिठाना हो उठाते हुये पढें:- **उत्तिष्ठ भगवन्-शम्भो, उत्तिष्ठ गिरिजापते, उत्तिष्ठ त्रिजगत्-नाथ त्रैलोक्ये मंगलं कुरु,** आसन पर फूल बिछाते हुये पढें:- **आसानाय नमः पद्मासनाय नमः वृषभासनाय नमः ज्ञानासनाय नमः,** आसन पर बिठाते हुये पढें:- **किम्-आसनं ते वृषभा-सनाय किंभूषणं वासुकि-भूषणाय । वित्तेश भृत्याय किम् अस्ति देयं, वागीश किं ते वचनीयम्-अस्ति-** महिम्नापार स्तोत्र पढते हुये रुपवर्क चन्दन आदि से भगवान् शिव को सजा कर, वस्त्र के रूप में फूल चढाते हुये पढें:- **कालाग्नि-रुद्र, सर्वज्ञ वरद-अभय -दायक, वस्त्रं गृहाण देवेश, दिव्य-वस्त्रोप-शोभित भवायदेवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय वस्त्रं परिकल्पयामि नमः** यज्ञोपवीत डालते हुये पढें:-

सुवर्ण-तारै-रचितं दिव्ययज्ञोपवीतकम्। नीलकण्ठ मया दत्तं गृहाण मत्-अनुग्रहात् भवाय देवाय यज्ञोपवीतं परिकल्पयामि नमः तिलक लगाते हुये पढें:- (चन्दन या केसर) सर्वेश्वर जगत्-वन्द्य, दिव्यासन-सुसंस्थित। गन्धं गृहाण देवेश दिव्यगन्धोप-शोभितम्, भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय समालभनं गन्धो नमः, चावल (अक्षत) फूल आदि चढ़ाते हुये पढें:- सदाशिव शिवानन्द प्रधान-करणेश्वर, पुष्पाणि बिल्वपत्राणि विचत्राणि गृहाण मे, भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेष्वराय, अनन्ताय, सूक्ष्माय शिवोत्तमाय एकनेत्राय एकरुदाय त्रिर्मूतये श्रीकण्ठाय शिखिण्डिने नन्दिने कहकालाय पुष्पाणि बिल्वपत्रणि समर्पयामि नमः। अभीष्ट - सिद्धिं मे देहि, शरणागत-वत्सल भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावर-णार्चनम्। गणपतये नमः, वृषभाय, कुमाराय अम्बिकायै चण्डे-श्वराय नमः अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सल, भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीया-वरणार्चनम्। इन्द्राय-वज्र-हस्ताय, अग्नये शक्ति हस्ताय, यमाय दण्डहस्ताय नै-ऋतिये खड्ग् हस्ताय, वणाय पाशहस्ताय, वायवे-ध्वज-हस्ताय, कुवेराय गदाहस्ताय ईशानाय-त्रिशूल-हस्ताय, ब्रह्मणे पद्महस्ताय विष्णवे चक्रहस्ताय अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल भक्तया सर्मपेय तुभ्यं तृतीय-वरर्णाचनम् जयायै नमः, विजयायै नमः सुभगायै नमः

दुर्भागयै नमः जयन्त्यै नमः, कुहिन्यै नमः अपराजितायै नमः, करालयै नमः, अभीष्ट सिद्धिं मे देहि..... चतुर्थावरणा-र्चनम्। सूर्याय नमः चन्द्रमसे नमः भौमाय नमः, बुधाय नमः, बृहस्पतये नमः, शुक्राय नमः, शनैचराय नमः, राहवे नमः, केतवेनमः, अभीष्ट सिद्धिं मे देहि.....पंचमा-वरणार्चनम्। अनन्त-नागराजाय नमः, वासुकि-नागराजाय नमः, तक्षकनाग-राजाय नमः, पंचनाग-राजाय नमः, महापद्म-नागराजाय नमः, कार्कोट-नागराजाय नमः, शंखपाल नागराजाय नमः, कुलिक-नाग राजाय अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल..... षष्ठमा-वरणार्चानम्-वज्राय फट्नमः, शक्तये फट्नमः, दण्डाय फट् नम्: खड्गाय फट् नमः, पाशाय फट्-नमः, ध्वजाय फट्नमः, गदायै फट्नमः, त्रिशूलाय फट्नमः, पद्माय फट् नमः, चक्राय फट्नमः अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत-वत्सल भक्तया समर्पये तुभ्यं सप्तमा-वर णार्चनम्। शिवाय पार्थवेश्वर चिन्तामणये सपरिवाराय सानु-चराय अर्घो नमः पुष्पं नमः धूप चढ़ाते हुये पढें:- महादेव मृडानीश जगत्-ईश निरंजन, धूपं गृहाण देवेश साज्यं गुगुल-कल्पितम्, भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय धूपं परिकल्पयामि नमः। रत्नदीप कर्पूर चढ़ाते हुये पढें:- हिरण्य-बाहो सेनानीर्-ओषधीनां पते शिव, दीपं गृहाण कर्पूरं कपिलाज्य त्रिवर्तृकम् भवाय देवाय

पार्वती सहिताय परमेश्वराय रत्नदीपं कर्पूरं परि-कल्पयामि नमः चामर खड़े होकर करते हुये पढ़ें:- **मयूर-पुच्छै र्देवेश शुभ्रैः चामर-कै-स्तथा, ध्वजं छत्रं वीजनं च गृहाण परमेश्वर-"व्यापतचराचर"** आदिस्तोत्र पढ़कर फिर से पढ़ें:- **भवाय देवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय चामरं परिकल्पयामि नमः,** आर्दशं (शीशा) दिखाते हुये पढ़ें:- **भवायदेवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय आर्दशं परिकल्पयामि नमः,** तर्पण करते हुये पढ़ें:- **एताभ्यो देवताभ्यः दीपो नमः धूपो नमः, शिवस्य सानुचरस्य-अर्घ्य-दाना-द्यर्चन-विधिः सर्वः परि-पूर्णोऽतु।** अब कटोरी में चावल, दूध, शहद, शक्कर रख कर अपर्ण करते हुये पढ़ें:- **क्षीरा-ज्य-मधु-संमिश्रं शुभ्रदघ्न-समन्वितम्। षड्रसैः समायुक्तं गृहाणान्नं निवेदये भवाय देवाय-पार्वती सहिताय परमेश्वराय चरुं मधुर्पकं परिकल्पामि नमः।** फूलों की अंजली अपर्ण करते हुये पढ़ें:- **हर-विश्वाखिला-धार, निराधार-निराश्रय, पुष्पाजंलिं-इमं शम्भो गृहाण वरदो भव भुवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय पुष्पा-जंलिं समर्पयामि नमः।** फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:- **राजराजाधि-देवेश निराधार निरास्पद फलं गृहाण मत्-दत्तं नारिके-लादिकं शुभम् भवाय देवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय फलं समर्पयामि नमः।** ताम्बूल चढाते हुये पढ़ें:- **शाश्वतात्म-महानन्द-मदनान्तक**

धूर्जटे गृहाण पूग-ताम्बूल-दलपत्रादि संयुतम् भवायदेवाय पार्वती साहिताय परमेश्वराय ताम्बूलं परिकल्पयामि नमः अर्घ परिक्रमा मन से देते हुये पढें:- **यानि कानि च पापानि, ब्रह्म हत्यादिकानि च, तानि सर्वाणि नश्यन्ते शिव-स्यार्घ-प्रदक्षिणत् "नागेन्द्र हाराय"** आदि षड् अक्षर स्तोत्र पढ़ कर प्रणाम करते हुये पढें:- **मृडानीशाद्य मे सर्वान्-अपराधान्-अनेकशः। क्षम स्वामिन् प्रणामं मे गृहाणाष्टांग संयुतम्। उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा मनसा वचसा च नमस्कारं करोमि नमः** अब चावल आदि को संकल्प रूप में छींटे मारते हुये पढें:- **अन्नं नमः, अन्नं नमः आज्यं-आज्यं, अद्य दिन अद्य यथा-संकल्पात्-सिद्धिर्-अस्तु,** अंजलिधारण करते हुये पढें:- **अन्न हीनं क्रियाहीनं विधिहीनं द्रव्यहीनं मन्त्रहीनं च यत् गतं तत्-सर्वम्-अच्छिद्रं सम्पूर्णम्-अस्तु एवम्-अस्तु।** कटोरी में दायें हाथ की अँगुलियों पर से जल छोड़कर उसी जल से भगवान् शंकर को आचमन देते हुये पढें:- **शन्नो देवीर्-अभीष्टये-आपो भवन्तु-पीतये। शँय्योर्-अभि स्रवन्तु-नः, भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्राय-अपोशानं नमः, आचमनीयं नमः,** पुनः, **शन्नो देवी** पहले की भाँति अंगुलियों पर से जल उसी कटोरी में डाल कर उस में तिल दक्षिणा डाल कर भगवान् को अपर्ण करते हुये पढें:- **भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय तिल हिरण्य रजत निष्कर्ण ददानि।**

प्रेप्युन पृष्ठ 19 से 24 तक सब पढ़ कर - अब अक्षत (चावल) सहित दो दर्भकाण्ड हाथ में लेकर विसर्जन के निमित्त पढें:- **तत्-महेशाय विद्महे, वाक्-विशुद्धाय धीमहि तन्न शिवः प्रचोदयात्** (तीन बार पढिये) **ॐ तत्-सत्-ब्रह्म- अद्य-तावत्-तिथौ अद्य**-मास-पक्ष-वार का नाम लेकर **भवस्य देवस्य शर्वस्य देवस्य महादेवस्य ईशानस्य देवस्य पार्वती सहितस्य परमेश्वरस्य पूजनं अछिद्रं सम्पूर्णम्-अस्तु एवम्-अस्तु।** तपर्ण करते हुये पढें:- **एताभ्यो देवताभ्यो यवोदकं नमः, उदकतपर्ण नमः।** नमस्कार करते हुये पढें:- **आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवन्-त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणा गतम्। आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम्। पूजाभागं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर। उभाभ्यां जानुभ्यां शिरसा उरसा वचसा मनसा नमस्कारं करोमि नमः।** तपर्ण करते हुये पढें:- **नमो ब्रह्मणे, नमो-अस्तु-अग्नये, नमः पृथ्व्यै, नम ओषधिभ्यः नमो वाचे, नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते कृणोमि। इति-एतासाम्-एव देवतानां सलोकतां सायुज्यं सार्ष्टिं सामीप्यम्-आप्नोति य एवं विद्वान् स्वाध्यायं अधीते। पूजितोसि मया भक्तया भगवन् गिरिजापते। स गौरीको मम स्वान्तं विश-विश्रान्ति हेतवे। मनस्या-न्तर्गतं मन्त्रं, मन्त्रस्या-न्तर्गतं मनः, मनो मन्त्रमयं दिव्यम्-एक पुष्पं शिवार्चनम्।**

ॐ शन्तिः शन्तिः शन्तिः

दिवचक्षीर पूजा

क्षीर से भरे हुये सात पात्र या सात टाकू रख कर प्रत्येक टाकू में एक एक नारीवन बन्द रखिये, अलग एक टाकू में चुटू, दूसरे पात्र में क्षेत्र पालों के लिये दो विभागों में थोड़ा-थोड़ा क्षीर रखें, जिसने दिवचक्षीर करना हो उसको चाहिये शुद्ध धोती पर सात सिन्दुर के तिलक लगा कर सिर पर धारण करें, अथवा किसी कागज पर सात तिलक लगा कर वह कागज सिर पर धारण करें, एक थाली में नैवेद्य के लिये क्षीर रखें।

पृष्ठ नं. 5 से 9 तक दीप धूप, **दीपः स्वधा, धूपाः स्वधा** तक पढ़ कर उसी तपर्ण के साथ तपर्ण करते हुये आगे पढिये:- **अनुमत्यै राकायै सिनिवाल्यै कुह्वै धात्र्यै सर्वेश्वर्यै अन्नीश्वर्यै श्रीमातृकादेवी सन्तोषणार्थं दीप धूप संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु दीपो नमः धूपो नमः।**

नैवेद्य के थाल को दोनों हाथों से पकड़ कर सारा प्रेप्युन पृष्ठ नं. 19 से 24 तक **हेरुका-दिभ्यो वटुकादिभ्यः** तक पढ़ कर आगे पढे:- **(1) अनुमत्यै (2) राकायै (3) सिनीवाल्यै (4) कुह्वै (5) धात्र्यै (6) सर्वेश्वर्यै (7) अन्नीश्वर्यै श्रीमातृकादेवी-सन्तोषणार्थं पायसं परिकल्पयामि नमः।**

जातवेदसे सुनवाम सोसम्-आरती-यतो निदहाति वेदः, सनः पर्षत्-अति-दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिता-त्यग्नि यह मन्त्र पढ कर अलग अलग सात नामों से प्रत्येक टाकू को स्पर्श करते जाये। **(1) अनुमत्यै (2) राकायै (3)**

सिनीवाल्यै (4) कुह्वै (5) धात्र्यै (6) सर्वेश्वर्यै (7) अन्नीश्वर्यै इन्हीं नामों से अलग-अलग प्रत्येक टाकू को तिलक अर्घ चढ़ाते हुये पढें:- **अनुमत्यै, समालभनं गन्धो नमः, अर्घोनमः, पुष्पंनमः, राकायै समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः, पुष्पं नमः, सिनीवाल्यै अर्घो नमः, पुष्पं नमः, कुह्वै-अर्घो:, पुष्पं नमः, धात्र्यै अर्घो नमः, पुष्पं नमः, अनुमत्यै राकायै, सिनीवाल्यै, कुह्वै, धात्र्यै, सर्वेश्वर्यै, अन्नीश्वर्यै दीपो नमः, धूपो नमः।** नारीवन जो पहले ही से टाकू पर रखा है स्पर्श करते हुये पढें:- **एतासां देवतानाम्-अर्घ्य-दाना-द्यर्चनविधिः सर्वः परिपूर्णो-अस्तु** तपर्ण करते हुये पढें:- **अन्नं नमः अन्नं नमः, आज्यं-आज्यं-अन्नं अद्य दिने-अद्य-यथा संकल्पात्-सिद्धिर्-अस्तु।** अंजलि धारण करते हुये पढें:- **अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं मन्त्रहीनं यत् गतं तत्-सर्वम्-अच्छिद्रं सम्पूर्णम्-अस्तु एवम्-अस्तु।** कटोरी में चावल (अक्षत) और जल डालते हुये पढें:- **शन्नो देवीर्-अभिष्टे-आपो भवन्तु पीतये शंयोर-अभि-स्रवन्तु नः,** यही जल थोड़ा-थोड़ा क्रमशः सभी टाकू पर डालते हुये पढें:- **अनुमत्यै-राकायै-सिनीवाल्यै कुह्वै धात्र्यै सर्वेश्वर्यै अन्नीश्वर्यै-अपोशानं नमः आचमनीयं नमः।** दक्षिणा के लिये कटोरी में तिल, चावल और पानी डालते हुये पढें:- **शन्नो-देवीर्-अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर्-अभि-स्रवन्तु नः** सातों टाकू पर दक्षिणा डालते हुये पढें:-

(1) अनुमत्यै दक्षिणायै तिल हिरण्य रजत निंष्कर्ण ददानि राकायै दक्षिणायै तिल हिरण्य रजत निष्कर्ण ददानि ऐसे ही ऊपर लिखे सातों नामों से दक्षिणा डालते जायें। फिर से दक्षिणा के रूप में सिक्के डालते हुये पढें:- **एता देवता: सदक्षिणान्नेन प्रीयतां प्रीता: सन्तु।** चुटू को स्पर्श करते हुये पढें:- **या काचित्-योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा परा, खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा, आकाश-मातृभ्य: अन्नं नम:,** इसी चुटू को तिलक लगाते हुये पढें:- **आकाश-मातृभ्य: समालभनं गन्धो नम:,** फूल अर्ध चढाते हुये पढें:- **आकाशमातृभ्य-अर्घोनम: पुष्पं नम:।** इष्टदेवी का क्षीर जो किसी पात्र में रखा होगा उस पात्र को स्पर्श करते हुये पढें:- **भगवत्यै अमायै कामायै चार्विग्यै टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै इष्ट-देवी भगवत्यै** (इष्टदेवी का नाम लेकर) शारिका अथवा **राज्ञाभगवत्यै पायसं समपर्यामि नम:,** इसी पात्र को तिलक लगाते हुये पढें:- **इष्टदेवी भगवत्यै समालभनं गन्धो नम:** अर्घ पुष्प चढाते हुये पढें:- **इष्टदेवी भगवत्यै अर्घो नम: पुष्पं नम:** क्षेत्रफल के एक भाग को स्पर्श करते हुये पढें:- **क्षांक्षेत्राधिपतये अन्नं नम:,** दूसरे भाग को स्पर्श करते हुये पढें:- **राम राष्ट्रधिपतये-अन्नं नम:, सर्वाभय-वर -प्रद: मयि पुष्टिं पुष्टिपति र्दधातु।** क्षमा पुष्प इष्टदेवी के पात्र को चढ़ाते हुये पढें:- **आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम् पूजाभागं न** जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि। प्रणाम करते हुये पढें:-

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा मनसा नमस्कारं करोमि नमः । दूध युक्त जल से तपर्ण करते हुये पढें:- **नमो ब्रह्मणे, नमो-अस्तु अग्नये, नमः पृथ्व्यै, नमः औषधीभ्यः, नमो वाचे, नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे बृहते कृणोमि,** यहाँ तक तीन बार पढ कर आगे पढें:- **इति-एतासाम्-एव-देवतानां सामीप्यं सार्ष्टितां सायुज्यं सलोकताम्-आप्नोति य एवं विद्वान् स्वाध्यायम्-अधीते ।**

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

यक्षामावसी पूजा

(क्ष्यचिमावस)

गोलाकार किसी पत्थर (काजवठ) को कुबेर के रूप में पूजा के स्थान पर सामने रख कर पृष्ठ 5 से 9 तक दीप धूप पढ़कर जीवादान के लिये विष्टर अथवा दर्भ सहित कटोरी में तिलक और तीन फूल डालते हुये पढें:- **संवः सृजामि हृदयं संस्पृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टा-स्तन्वः सन्तु वः। संसृष्टः प्राणो-अस्तु वः। संवायः प्रिया-स्तन्वः संप्रिया हृदयानि-वः। आत्मा वो अस्तु सं प्रियः संप्रिया-स्तन्वो मम।** इसी पानी से कुबेर जी की मूर्ती पर जल छिड़कते हुये पढें:- **अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। बृहस्पतेः प्राणः स-ते प्राणं ददातु तेन जीव।** चावल सहित दर्भ के दो कांड हाथ में लेकर तीन बार पढें :- **यक्षणीशाय विद्महे गदाहस्ताय धीमहि तन्नो कुवेरः प्रचोदयात्** फिर से पढ़ें:- **ॐ तत्-सत-ब्रह्म-अद्य-तावत्-तिथौ अद्य**-मास पक्ष तिथि वार का नाम लेकर पढें :- **भगवतः कुवेरस्य त्र्यबक-सखस्य यक्षेशस्य धनाधिपस्य-अर्चां-अहंकरिष्ये ॐ कुरुष्व।** हाथ में पहले से पकड़े हुए केवल चावलों को कन्धों से फेंक कर और दर्भ के दो तिनके निर्माल्य में डालकरफिर से दो दो दर्भकाण्ड आसन के रूप में डालते हुये पढें :- **भगवतः कुवेरस्य त्र्यम्बक-सखस्य यक्षेश्वरस्य धनाधिपस्य इदं-आसनं नमः।** चावल सहित दो दर्भकाण्ड दायें हाथ से पकड़

कर पढें :- **भगवते कुवेराय त्र्यम्बक-सखाय यक्षेश्वराय धनाधिपाय युष्मान्-पूजयामि ॐ पूजय।** चावल कन्धों से फेंक कर दर्भ के दो काण्ड हाथ में ही रख कर पढ़ें :- **भगवन्तं कुबेरं त्र्यम्बकसखं यक्षेश्वरम्-धनाधिपम्-आवाह-यिष्यामि ॐ आवाहय।** चावल कन्धों से फेंक कर दर्भकाण्ड निर्माल्य में डालें और पढ़ें :- **पाद्यार्थम्-उदकं नमः। शन्नो देवीर्-अभीष्टये-आपो भवन्तु पीतये, शं योर्-अभि-स्त्रवन्तु नः।** इस मन्त्र से खोसू या कटोरी में जल डाल कर उसी पानी से कुबेर जी को छिड़कते हुये पढ़ें :- **भगवते कुवेराय त्र्यम्बक-सखाय यक्षेश्वराय धनाधिपाय पाद्यं नमः।** पाद्य का बचा हुआ जल निर्माल्य में डाल कर फिर से अर्घ्य के लिए इसी कटोरी में शन्नो **देवीर्-अभीष्ट**..... ऊपर लिखे मन्त्र से जल डाल कर कुवेर जी को दर्भ से छिड़कते हुये पढें:- **भगवन् कुवेर त्र्यम्बकसख यक्षेश्वर धनाधिप इदं वोऽर्घ्यं नमः** कटोरी में आचमन के लिये फिर से जल डाल कर कुवेर जी को अर्पण करते हुए पढें :- **कुवेराय त्र्यम्बकसखाय यक्षेश्वराय धनाधिपाय-इदं-आचमनीयं नमः** खासू अथवा कटोरी में जल डालते हुये पढें :- **अन्नं नमः अन्नं नमः, आज्यं-आज्यम्-अद्यदिने-अद्य यथा संकल्पात्-सिद्धिर्-अस्तु।** अंजलि धारण करते हुये पढें :- **अन्नहीनं क्रिया हीनं विधिहीनं द्रव्यहीनं मन्त्रहीनं यत्-गतं तत्-सर्वम्-अच्छिद्रं सम्पूर्णम्-अस्तु। एवम्-अस्तु।** कटोरी में दायें हाथ की अंगुलियों से जल डाल कर उसी जल से कुबेर

जी को आचमन अर्पण करें यानी थोड़ा सा जल डालें। कटोरी में चावल जल दीक्षिणा डालते हुये पढें :- **एता देवता: सदक्षिणान्नेन प्रयन्तां प्रीता: सन्तु।**

अब खिचड़ी का प्रेप्युन पृ० 19 से 24 तक पढ़कर चुटू आदि रख कर दीप: स्वधा धूप: स्वधा तक पढ़कर दो दर्भकाण्ड हाथ में लेकर कुवेर जी को विसर्जन करते हुये तीन बार पढें :- **यक्षेशाय विद्महे गदाहस्ताय धीमहि तन्न कुवेर: प्रचोदयात्।** यह पढ़कर फिर से पढें :- **ॐ तत्-सत्-ब्रह्म अद्य तावत्-तिथौ अद्य मासस्य पक्षस्य तिथौ वासरा-न्वितायां भगवत-कुवेरस्य त्र्यम्बक-सखस्य यक्षेश्वरस्य धनाधिपस्य आत्मनो वांगमन: कायोपार्जित-पाप-निवार-नार्थं कुवेर-पूजनम्-अच्छिद्रं सम्पूर्णम्-अस्तु एवम्-अस्तु।** फिर से कुवेर जी को अर्घ पुष्प चढाते हुये पढें :- **आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम्-पूजाभागं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर।** नमस्कार करते हुये पढें :- **उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा मनसा वचसा नमस्कारं करोमि नम:।**

हाथ जोड़ के फिर से प्रार्थना करें :- **ॐ धनाध्यक्षाय देवाय नर-यानोप-वेशिने। नमस्ते राजराजाय कुवेराय महात्मने।**

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:।

जन्मदिन पूजा

पूजा आरम्भ करने से पहले यज्ञोपवती धारण करें और थाली में नारीवन सात गांठ डालकर रखें - नमस्कार करते हुय पढें :-

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिार्वणं चतुर्भुजम्। प्रसन्न-वदनं ध्याये सर्व-विघ्नोप-शान्तये अभि-प्रीतार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि सर्व विघ्न-च्छिदे तस्मै गणधिपतये नमः हृदय और मुख को जल छिड़कते हुये पढ़ें :- **तीर्थे स्नेयं तीर्थम्-एव, समानानां भवति, मानः शंसो अररुषो धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षा णो ब्रह्मणस्पते** अनामिका ऊँगुली में पवित्र धारण करके अपने आप को तिलक अर्घ पुष्प लगाते हुये पढें :- **परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मंत्र-नाथाय आत्मने नारायणाय-आधार-शक्त्यै समाल-भनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः** रत्नदीप, धूप को तिलक अर्घ पुष्प अर्पण करके सूर्य भगवान् के निमित थाली में तिलक तथा अर्घ पुष्प अर्पण करते हुये पढें :- **नमो-धर्म-निधानाय नम स्वकृत-साक्षिणे, नामः प्रत्यक्षेदवाय भास्कराय नमो नमः।** खोसू से थाली में रखे नारीवन के ऊपर जलधारा डालते हुये पढें :- **यत्रास्ति माता न पिता न बन्धु-भ्रातापि नोयत्र् सुहृत्-जनश्च न-ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्म-दीपं शरणं प्रपद्ये, आत्मने नारायणाय-आधार-शक्त्यै-दीप-धूप संकल्पात् सिद्धिर-**

अस्तु दीपो-नमः धूपो नमः । जल सहित कटोरी में तिलक और तीन पुष्प डालते हुये पढें :- **सं वः सृजामि हृदयं, संसृष्टं मनोअस्तु वः, संसृष्टा-स्तन्वः सन्तु वः, संसृष्टः प्राणोऽस्तु वः, संयावः प्रिया-स्तन्वः, संप्रिया हृदयानि-वः । आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रिय-स्तन्वो मम ।** जल की धारा नारीवन पर डालते हुये पढें :- **अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव । बृहस्पते प्राणः सते प्राणं ददातु तेन जीव जन्मोत्सव-देवताभ्यः जीवादानं परिकल्पयामि नमः ।** चावल सहित दो दर्भकाण्ड अथवा दो फूल हाथ में लेते हुये तीन बार पढें :- **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्-सवितुर्-वरेण्यं भर्गो-देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्-ॐ जन्मो-त्सव-देवतानां अर्चाम्-अहं करिष्ये ॐ कुरुष्व**-हाथ में पकड़े हुये दर्भ अथवा फूल निर्माल्य में डाले फिर से दो फूल आसन के रूप में नारीवन के सामने डालते हुये पढें:- **सप्त जन्मोत्सव-देवतानां-आसनं नमः ।** चावल सहित दर्भ अथवा दो फूल हाथ में पकड़ कर केवल चावल को कन्धों से फेंकते हुये पढें:- **सप्तजन्मोत्सव-देवताभ्यः युष्मान् पूजायामि ॐ पूजय-** फिर दो फूल हाथ में पकड़ते हुये पढें :- **सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् । स भूमिं विश्वतो वृत्वा-त्यतिष्ठत्-दशांगुलम्-जन्मोत्सव देवताः आवाह-यिष्यामि ॐ आवाहय ।** पहले पकड़े हुये फूल अथवा दर्भ निर्माल्य में डालकर तीन बार पुष्प नारीवन पर डालते हुये तीन बार पढें :- **भगवन् पुण्डरी काक्ष भक्तानु-ग्रहकारक, अस्मत्-दयानुरोधेन सन्निधानं**

कुरु प्रभो 3। दोनों कन्धों के ऊपर से अर्घ फेंकर प्राणायाम करके कटोरी में जल डालते हुये पढें:- **पाद्यार्थम्-उदकं नमः। शन्नो देवीर्-अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर्-अभि-स्त्रवन्तु नः।** लाय, केसर, सर्वौषधि, दर्भ जल से सभी वस्तु कटोरी में डालकर नारीवन पर डालते हुये पढें:- **अश्वत्थाम्ने बलये व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय, मार्कण्डेयाय, परशुरामाय, सप्तचिर-जीवेभ्यः पाद्यं नमः।** पाद्य का बचा हुआ जल निर्माल्य में डालकर फिर से कटोरी में जल डालते हुये पढें :- **शन्नो देवीर्-अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर्-अभिस्त्रवन्तु नः।** दूध, दही, जल दर्भ घी चावल, जव सर्वौषधि ये आठ चीजें कटोरी में डालकर नारीवन पर डालते हुये पढें :- **अश्वत्थामन् बले व्यास हनुमन् कृपार्चाय मार्काण्डेय परशुराम सप्तचरजीविनः इदं वोऽर्घ्यं नमः।** शुद्ध जल डालते हुये पढें:- **प्रजापतये जन्मोत्सव-देवताभ्य आचमनीयं नमः।** दूध जल आदि डालते हुये पढें :- **तत्-विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुर-आततम् तत्-विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णो-र्यत् परमं पदम्। प्रजापति-जन्मोत्सव-देवताभ्यः स्नानं नमः,** कटोरी आदि में नारीवन के लिये फूलों का आसन बनाते हुये पढ़ें :- **आसनाय नमः, गरुडासनाय नमः, पद्मासनाय नमः शतदल-पद्मासनाय नमः, सहस्र-दलपद्मासनाय नमः। किम्-आसनं ते गरुडासनाय किं भूषणं कौस्तुभ-भूषणाय। लक्ष्मीकलत्राय किम्-अस्ति देयं वागीश किंते वचनीयम्-अस्ति।**

नारीवन को आसन पर बिठाते हुये पढ़ें:- **उत्तिष्ठ भगवन् विष्णो, उतिष्ठ कमलापते, उत्तिष्ठ त्रिजगत्-नाथ त्रैलोकी मंगलं कुरु।** नारीवन को सात तिलक लगाते हुये पढें :- **अश्वत्थाम्ने, बलये व्यासाय हनुमते कृपाचार्याय मार्कण्डेयाय परशुरामाय सप्तचिरजीवेभ्य: समालभनं गन्धो नम:।** नारीवन पर अर्घ पुष्प चढाते हुये पढें :- **तस्मात्-अश्वा-अजायन्त ये के चोभ-यादत:। गावोह जज्ञिरे, तस्मात् जाता अजावय:। अश्वत्थम्ने बलये व्यासाय हुनमते कृपाचार्याय मार्काण्डेयाय परशुरामाय सप्तचिर-जीवेभ्य: अर्घो नम: पुष्पं नम:।** रत्नदीप कर्पूर घुमाते हुये पढें :- **तेजोसि शुक्रम्-असि ज्योतिर्-असि धामासि प्रियं देवानाम्-अनाधृष्टं देवयजनं देवता-भ्यस्त्वा देवताभ्यो गृहणामि यज्ञेभ्यस्त्वा यज्ञियेभ्यो गृह्णामि जनमोत्सवदेताभ्य: रत्नदीपं कर्पूरं धूपं च परिकल्पयामि नम:।** चामर करते हुये पढें :- **जयनारायण जयपुर-षोत्तम, जय वा-मन कंसारे, घोरं हर मम नकरकरिपु: केशव कल्मषभारं माम्-अनुकम्पय दीनम्-अनाथं कुरुभव- सागर पारम्-भगवते वासुदेवाय लक्ष्मी सहिताय नारायणाय जन्मोत्सव-देवताभ्य: चामरं परिकल्पयामि नम:।** पुष्प चढाते हुये पढें :- **ध्येयं सदा परिभवघ्नं- अभीष्ट-दोहं, तीर्थास्पदं शिव-विरचिं-नुतं शरणयम्। भृत्यार्ति-हं प्रणतपाल-भवाब्धि-पोतं वन्दे महापुरुष ने चरणार-बिन्दम्।** नमस्कार करते हुये पढें :-

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा मनसा अष्टांग-नमस्कारं करोमि नमः । दक्षिणा अर्पण करते हुय पढें:- **जन्मोत्सव-देवताभ्यो दक्षिणायै तिल-हिरण्य रजत निष्कर्णं ददानि ।** फिर से कुछ सिक्के अर्पण करते हुये पढें:- **एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु ।** पुष्प चढाते हुये पढ़ें :- **ॐ तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुर्-आततम् तत्-विप्रासो विपण्यवो जगृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्-परमं पदम् ।** अब नैवद्य तहर क्षीर थाली में लाकर एक पात्र में चुटू और पाँच म्यचियाँ रखें, नैवेद्य के साथ दही और मिश्री (नाबद) भी रखें, नैवेद्य को दोनों हाथों से स्पर्श करते हुये पृष्ठ 19 से 24 तक सारा प्रेप्युन हेरकादिभ्यः वटुकादिभ्यः तक पढकर फिर से पढें :- **अश्वत्थाम्ने बलये व्यासाय हनुमते कृपाचार्याय मार्काण्डेयाय परशुराम सप्त-चिरजीवेभ्यः ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः** हाथ में फूल लेकर पढें :- **आज्ञा में दीयतां नाथ नैवेद्यस्या-स्य भक्षणे शरीर-यात्रा सिद्ध्यर्थं भगवन्-क्षन्तुम्-अर्हसि ।** पुष्प चढाते हुये पढें :- **आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा, भगवन्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम् ।** पवित्र निकाल कर हाथ में नारीवन बान्ध कर, चुटू कहीं बाहिर रख कर निर्माल्य नदी में डालकर नैवद्य के साथ दही मिश्री (चीनी) दायें हथेली में रख कर मुँह में डालते हुये पढें :- **मार्काण्डेय नमस्तुभ्यं सप्तकल्पान्त-जीवन- आयुर्-आरोग्य-सिद्ध्यर्थं प्रसीद भगवन् मम ।**

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

शंकुप्रतिष्ठा पूजा

(कंन-दिनच पूजा)

पूजा सामग्री सात तीर्थों, नदियों, तालाब आदि का जल लगभग एक किलू वजन **(सात धातु)** सोना, चांदी, तांबा, लोहा, पीतल, कांसी, ज़सद आदि **(सात अनाज)** यानी सतसोस् गेहूँ, मक्की, जव, माष, मूँग, चना, मटर आदि **(सात औषधियाँ)**:- सोंठ हलदी बनुफशा गुलावपत्र, ग्यवथीर, कलव्युठ आदि जो कुछ सुलभ हो वही लायें हमारी

लिखी हुई चीजें ही जरूरी नहीं परन्तु संख्या में सात होने आवश्यक हैं, **(पांच मिटियां)** – काश्मीर में चक्रेश्वर, क्षीरभवानी काश्मीर से बाहिर होने पर प्रसिद्ध स्थानों हरिद्वार, मथुरा आदि, चुराहे की मिट्टी जहाँचार रास्ते मिलते हैं, स्यकट्रेट अथवा किसी राजभवन की, गौशाला की कुल मिलाकर मिट्टी एक पाव तक होनी चाहिए, फूल पाँच प्रकार के होने चाहिए, काला फूल नहीं होना चाहिये, **फल पाँच** प्रकार के अखरोट, बादाम, सेब संतरा, अनार जो सुलभ हो, पाँच होने चाहिये, इलायची, दालचीनी, लोंग, काली मिर्च ये सभी वस्तुयें एक एक तोला होनी चाहिये, **सुफारी काठ** पाँच अदद, सुफारी, चकनी 5 अदद **पाँच खूंटियाँ** किसी फलवाली लकड़ी की जिनकी लम्बाई लगभग 16 ऊँगल तक हो, पांच पत्थर चोरस (चार कोने वाली) 5 अदद **चार प्रतिमायें** ताँबे के पत्र पर बनाई हूँ, एक एक ताँबे का पत्र चार चार ऊगुंल चोरस होना चाहिये जिन पर अलग अलग खुदी हुई मूर्तियाँ होनी चाहिए वह मूर्तियाँ पाँच हैं (1) **वृषभ** (2) **घोड़ा** (3) **हाथी** (4) **मनुष्य,** इन चार प्रतिमाओं के इलावा **चांदी की तार का सांप** होना चाहिये जिस का वज़न लगभग एक तोला होना चाहिये। **पाँच मिट्टी की वारियाँ।** रत्नदीप के लिये **पांच दीपक (चोंग)** धूप, कण्ठगण,तिल, सिन्दूर, नारीवन, लाय, दूध दही, सर्षप, सर्वौषधि, घी, फूल, चावल, नाबद, किशमिश। रत्नदीप के लिये रूई, माचिस, जंग के लिये चावल, नमक, अखरोट थोड़ा सा चूना। प्रसाद के लिये सत्यदेव रोठ आदि होना-चाहिये – तहर आदि भी बनायें। कण्ठगन आदि जलाने के लिये थोड़े से कोयले, बिछाने के लिये आसन आदि, यदि आप ने नींव मुहूर्त से पहले ही खोदी होगी, तो चार कोनों पर और बीच में खोदी हुई नींव से नीचे गहरे छोटे इतने गढे बनायें जिनमें आप की लाई हुई वारियाँ समा सके, यदि नींव खोदी न हो तो चारकोणों पर तथा बीच में इतने गहरे गढे बनाये जहाँ पूजा करते समय पूजा करने वाला बैठ सके और जहाँ आप वारियाँ दबाकर रखेंगे वहां से नींव खोदते समय वे वारियाँ निकल न जायें (गढे

सोच समझ कर बनायें) मंगलवार तथा पंचक के दिन नींव न खोदे बाकी विशेष मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं है, मासान्त आदि भी होना नहीं चाहिये।

मुहूर्त के दिन मुहूर्त से कुछ समय पहले सभी परिवार तथा सम्बन्धी. प्रतिष्ठा यानी "कँन" के स्थान पर पहुँचकर जब तक सारी सामग्री इकट्ठी न हो जाये मुर्हूत के समय तक सभी मिल जुलकर ऊँचे ऊँचे स्वर में उच्चारण करें **'सर्वमंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते** अथवा **श्रीमत् नारायण नारायण ॐ** अथवा **ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च, नमः शंकराय च मयस्कराय च, नमः शिवाय च शिवतराय च** अथवा **हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे"** सभी सामग्री जल मिट्टी औषधियाँ आदि बांट कर वारियों में डाले, सभी वारियों पर सिन्दूर से लिखें **"श्रीः"** वारियों को फूल की मालाओं से सजायें पाँचों पत्थरो पर सिन्दूर से **"श्रीः"** लिखे। रत्नदीप धूप जला कर रखें यह सारा काम समाप्त करके (उत्तर पूर्व) कोण यानी ईशानी कोण पर आसन बिछायें, खूँटियाँ और पत्थर पाँच गढों पर पहुँचा के. रखें, पाँचों वारियाँ जो औषधियों जल से भरी होगी एक बड़ी थाली या परात में रखें उन वारियों के ऊपर क्रमशः बैल, घोड़ा, मनुष्य हाथी तथा सांप की मूर्ति रखें और पूजा आरम्भ कीजिये पहले इसी पुस्तक के पृष्ट 5 से 9 तक दीपधूप करें **दीपो नमः धूपो नमः** तक पढ़कर **ॐ तत्-सत्-ब्रह्म अद्य-तावत् तिथौ अद्य मासस्य पक्षस्य तिथौ वासरान्वितायां** मास तिथि वार का नाम लेकर पढें:- **महागणपतये, कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे, द्वार देवताभ्यः ब्रह्मणे वास्तोष्पति देवताभ्यः**

ध्रुवाय हरये, लक्ष्म्यै कूर्माय, वृषभाय, अश्वाय, नराय गजाय अनन्ताय शंकु-प्रतिष्ठा-निमितं दीप धूप संकल्पात् सिद्धर्-अस्तु दीपो नमः धूपो नमः जीवादान के लिये विष्ठर अथवा दर्भकांड सहित कटोरी में तिलक और तीन फूल डालते हुये पढ़ें:- **संवः सृजामि हृदयं, संसृष्ट मनो अस्तुवः। संसृष्टा तन्वः सन्तु-वःसंसृष्टः प्राणः अस्तु वः। संयावः प्रिया-स्तन्वः संप्रिया हृदयानिवः। आत्मा वो अस्त संप्रियः, संप्रिय-स्तन्वो मम।** यही जल क्रमशः पाँच वारियों की प्रतिमाओं पर जो क्रमशः रखी है (1) **वृषभ,** (2) **घोड़ा,** (3) **मनुष्य** (4) **हाथी** (5) **सांप पर डालते हुये पढें:- अश्विनोः, प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव, मित्रा-वरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणं ददातु तेन जीव। जीवादानं परिकल्पयामि नमः।** चावल सहित दर्भ के दो काण्ड हाथ में लेकर पढ़ें :- **गायत्र्यै नमः, ॐ भूभुर्वः स्वः तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्, ॐ तत्-सत्-ब्रह्म-अद्यतावत्-तिथौ अद्य-मास्य पक्षस्य तिथौ वारा-न्वितायां ध्रुवस्य हरे, लक्ष्म्याः कूर्मस्य अश्वस्य नरस्य गजस्य-अनन्तस्य-आत्मनो वांगमनः कायोपार्जित-पापनिवाराणार्थं शुभ-फल-प्राप्त्यर्थं शंकु-प्रतिष्ठा पूजनं शिला-प्रतिष्ठा-पूजनम्-अहं करिष्ये-ॐ कुरुष्व,** चावल को कन्धों से फेंक कर दोनों दर्भकांड निर्माल्य में डालकर फिर से दो दो दर्भकांड आसन के रूप में डालत हुये पढ़ें:- **ध्रुवस्य हरेः**

लक्ष्म्याः कूर्मस्य वृषभस्य अश्वस्य नरस्य गजस्य अनन्तस्य-आसनम्-नमः । चावल और दर्भ के दो कांड हाथ में पकड़कर **ध्रुवं हरिं लक्ष्मीं कूर्मं वृषभं अश्वं-नरं-गजं अनन्तं आवाहयिष्यामि ॐ आवाहय** दोनों कन्धों से चाल फेंक कर प्राणायाम करके कटोरी में जल डालते हुये पढ़ें:- **पाद्यार्थम्-उदकं नमः शन्नो-देवीर्-अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शयोर-अभि-सस्वन्तु नः** इसी जल में लाय. तिलक सर्वौषधि दर्भजल डाल कर दर्भ से अथवा फूल से पांचों मूर्तियों को छिड़कते हुये पढ़ें :- **ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै कूर्माय वृषभाय अश्वाय नराय गजाय अन्नताय पाद्यं नमः** पाद्य का बाकी बचा हुआ जल निर्माल्य में डालकर फिर से अर्घ्य के लिये जल डालते हुये पढें :- **शन्नो देवीर्-अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर्-अभि स्त्रवन्तु नः** इसी जल में दूध, दर्भ घी दही चावल जव सर्षप डालते हुये पढ़ें :- **ध्रुव हरे लक्ष्मि कूर्म वृषभ अश्व नर गज अनन्त इंद-वोऽर्घ्यं नमः** पाँचों प्रतिमाओं पर फिर से जल डालते हुये पढ़ें :- **उदत्यं जात-वेदसं देवं वहन्ति केतवः दृश्ये विश्वाय सूर्यं स्नानं परिकल्पयामि नमः** यहाँ तक आप पांच प्रतिमाओं की पूजा एक ही स्थान पर इकट्ठे करें यहाँ से अब अपने अपने स्थान गढे पर जाकर पूजा करें अब पहले वृषभ की प्रतिमा वाली वारी उठाकर **पूर्व ईशान कोण पर** गढें में रखी हुई पत्थर के ऊपर फूल चढ़ाते हुये पढें :- **आसनाय नमः पद्मासनाय नमः शतदल-पद्मासनाय नमः** गढे में पहले से रखी हुई पत्थर पर वारी सहित प्रतिमा रखें और अपने दायें हाथ की तरफ गढे में पहले से रखी हुई खूँटी किसी पत्थर से गाढें (शंकु) दबाते हुये पढें :- **ध्रुवा**

द्यौ-र्ध्रुवा पृथिवी ध्रवासः पर्वता इमा ध्रुवं विश्वं-इदं सर्वं ध्रुवो राजा विश्वम्-असि अब प्रतिमा, वारी, खूँटी तथा पत्थर पर तिलक अर्घ फूल लगाते हुये पढें:- **ध्रुवाय लक्ष्म्यै वृषभाय-शंकवे प्रतिष्ठा-शिलायै समालभनं गन्धो नमः, अर्घोनमः, पुष्पं, नमः,** वारी, प्रतिमा, खूँटी को नारीबन बांधते हुये पढें :- **ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै वृषभाय शंकवे प्रतिष्ठा-शिलायै वासो नमः,** नमस्कार करते हुये पढें :- **ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै वृषभाय शंकवे प्रतिष्ठा-शिलायै नमस्कारं करोमि नमः एतासां देवतानां-अर्घ्य-दाना-ध्यर्चन-विधिः सर्वः परिपूर्णोऽस्तु** जल प्रतिमा आदि पर डालते हुये पढें :- **अन्नं नमः, अन्नं नमः आज्यं आज्यं-अन्नं-अद्यदिने अद्य यथा संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु** अंजलि धारण करते हुये पढें :- **अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं द्रव्यहीनं मन्त्रहीनं यत्-गतं तत्-सर्वम् अछिद्रं सम्पूर्णम्-अस्तु-एवम्-अस्तु ।** खोसू में दायें हाथ की ऊँगलियों पर से जल डालकर उसी जल से वृषभ की मूर्ति पर आचमन के रूप में थोड़ा सा जल डालते हुये पढें :- **शंनो देवीर्-अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर्- अभिस्त्रवन्तु नः ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै वृषभाय-शंकु प्रतिष्ठा-शिलायै आचमनीयं नमः,** फिर से खोसू में अर्घ जल दक्षिणा डालते हुये पढें :-**शंनो देवीर्-अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर्-अभिस्त्रवन्तुनः, ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै वृषभाय-शंकु-प्रतिष्ठा शिलायै तिल-हिरण्य-रजत-निर्ष्कणं ददानि** फिर से कुछ दक्षिणा डालते हुये पढें:- **एता**

देवता: सदक्षिणा-न्नेन प्रीयन्तां प्रीतां सन्तु-नैवेद्य किशमिश नाबद आदि अर्पण करते हुये पढें :- **ॐ तत्-सत्-ब्रह्म मासस्य पक्षस्य तिथौ वारन्वितायां ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै वृषभाय शंकवे प्रतिष्ठा शिलायै ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नम: - सर्वमंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु-ते-** इस मन्त्र का बार-बार उच्चारण करते हुये वारी को प्रतिमा सहित उठा कर जो बड़े गढे में छोटा सा गढा खोदा है उस में रख कर उस के ऊपर पूजा किया हुआ पत्थर रखें प्रणाम करते हुये फूल चढाते हुये पढें :- **ॐ तत् विष्णो: परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरय:, दिवीव चक्षुर-आततं, तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांस: समिन्धते, विष्णो-र्यत्परमं पदम्** । सभी खडे होकर फूल हाथ में लेते हुये पढें :- **सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चित् दु:खभाक्-भवेत्**

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:

अग्निकोण : पूर्व दक्षिण कोण पर वारी सहित घोड़े की प्रतिमा लायें पूर्वदक्षिण कोण के गढे में पत्थर पर फूल बिछा कर ऊपर दर्ज किये हुये ईशान कोण (पूर्व उत्तर) की पूजा की भांति सब पूजा करें केवल **वृषभाय** के बदले **अश्वाय** पढें।

नैऋतिकोण : दक्षिण पश्चिम कोण पर मनुष्य वाली वारी रख कर उसकी पूजा ऊपर लिखी पूजा की भांति कीजिये केवल **वृषभाय** के बदले **नराय** पढें।

वायुकोण : पश्चिम उत्तर कोण पर हाथी की मूर्ति वाली वारी

रख कर उसकी पूजा ऊपर लिखी पूजा की भांति करें केवल **वृषभाय** के बदले **गजाय** पढें।

बीचवाले गढे में : साँप मूर्तिवाली वारी की पूजा ऊपर लिखी विधि से कीजिये **वृषभाय** के बदले **अनन्ताय** पढें :- बीच वाले गढे की पूजा समाप्त करके सभी परिवार वाले एकत्रित होकर सामूहिक रूप में पढें :- **"ॐ श्रीमत् नारायण नारायण नारायण ॐ। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।** अब "तहर" रोठ आदि का प्रेप्योन पृष्ठ नं० 19 से पढें - अन्त में सामूहिक आरती करें, आरती के पश्चात् प्रसाद बाँटें :-

क्या बुनियाद मकान के दिन या प्रवेश के दिन मांस का चुटू-शीशनोर आदि बलि करना आवश्यक है ?

शास्त्रों में ऐसे शुभ काम करते समय बलि देने का विधान अवश्य है परन्तु जिस को हम बलि कहते हैं, वह हमारे ऋषियों तथा हमारी संस्कृति पर एक प्रकार का कलंक है - जबकि उपनिषद में आता है **"देवोद्देश्येन यथाविधि, स्वोपहार-त्याग: बलि:"।** **देवता के निमित यथाविधि अपने प्रियशरीर का अंग अंग दु:खियों अथवा देश के लिए अर्पण करना ही बलि कहलाता है, न कि किसी घास फूस खाने वाले पशु (मुनि) का कलीजा निकाल कर अर्पण करना, अपना कलीजा दूसरे के दु:ख को दूर करने के लिए अर्पण करना ही बलि कहलाता है। आप इस बात का विश्वास रखें :- यदि आप ऐसे शुभ काम पर हिंसा (कतल) से सम्बन्धित मांस (शीशनोर) का प्रयोग करेंगे तो यह शुभ काम आपके लिए शुभफलदायक नहीं होगा।**

(प्रेमनाथ शास्त्री)

गृहप्रवेश पूजा

नये मकान में दाखिल होना

प्रवेश के लिये सामग्री– गौमाता, श्री भगवद् गीता, महालक्ष्मी का अथवा इष्टदेवी का फोटू, लाल झँडियाँ जिसमें कील दबाने के लिये छोटी–छोटी लकड़ी लगी हो, पानी से भरा हुगा घड़ा, दूध का घड़ा अथवा बाल्टी, असली घी का डिब्बा, चावल की बोरी अथवा चिलमची चावल से भरी हुई, धान्य की थाली, सतसोस सात अजनास गेहूँ, मक्की, मूँग, चन्ना, माष, राजमाष, मटर आदि हर अनाज एक एक पाव इक्टठे थाली में रखें, भिन्न–भिन्न प्रकार के फूलों से भरी टोकरियाँ, आग सहित अंगीठी जिस में कण्ठगण और तिल पहले से ही जलता हो, रत्नदीप, आदि यानि घर में काम आने वाली वस्तुएं पूजा के लिये सिन्दूर, केसर, नारीवन, तिल लाय, जव किशमिश शहद, बर्फी जंग के लिये चावल, नमक अखरोट आदि।

जिस दिन प्रवेश करना हो उस दिन मुहूर्त समय से पहले सारी ऊपर लिखी सामग्री नये मकान के आंगन में चटाई आदि बिछा कर इकट्ठी करें– मकान के चारों ओर विशेषतया जिस दरवाजे से प्रवेश करना हेा उस द्वार की दोनों दिवारों पर चूने से क्रूल, झँडिया कील से दबायें फूलों नारीवन तथा सिन्दूर के तिलक से दरवाजे को पहले ही से सजा कर रखें दरवाजे पर सिन्दूर से लिखें **"श्री:"** *'ॐ'* यह सब कुछ पूरा करके पूजा आरम्भ करें।

पूजा से पहले गोमाता को प्रवेश दरवाजे के सामने सहन में बांध कर रखें, खाने के लिए कुछ चारा डालें ताकि वह पूजा के समय शांत रूप से टिकी रहे गोमाता को तिलक लगा कर फूल की माला अपर्ण रके चारों पाँव के नीचे थोड़ा सा तिलक **(ऋग्वेदाय, यजुर्वेदाय, सामवेदाय, अर्थववेदाय)** इन नामों से लगायें इन्हीं नामों से अर्घ फूल, दक्षिणा तथा नैवेद्य (किशमिश) डाल कर प्रणाम करें हाथ जोड़ कर पढें:–

"न केवलानां-पयसां प्रसूति-अवेहि मां कामदुघां प्रसन्ना" गोमाता को कमरों के अन्दर प्रवेश करवाने की आवश्कता नहीं ऐसा ना हो वह उसके मकान में प्रवेश करते समय कोई अड़चन पैदा करे- भूसा गुड आदि खिला कर प्रवेश के पश्चात् गाय को खुला छोड़ कर आदर से बाहर निकाले।

प्रवेश पूजा विधिः

जिस दरवाजे से प्रवेश करना हो उस दरवाजे की ओर मुख करके आसन बिछा कर दीप धूप जला कर पूजा आरम्भ करें - पूजा आरम्भ करने से पहले नया यज्ञोपवीत धारण करें - यज्ञोपवीत धारण करते समय किसी लड़की से जंग लानी चाहिये यज्ञोपवीत धारण करते हुये पढें:- और शंख बजवायें **"यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापते-र्यत्-सहजं पुर-स्तात्-आयुष्यम्- अग्र्यं प्रतिमुंच-शुभ्रं-यज्ञोपवीतं बलम्-अस्तु तेजः।**

पहले पृष्ठ नं. 5 से 9 तक **दीपो नमः** तक पढ कर फिर से पढें:- **ॐ तत्-सत्-ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य** मास पक्ष तिथि वा का नाम लेकर पढें:- **महागणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै मेरु-प्राकार-देवताभ्यः दीपधूप संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु दीपोनमः धूपोनमः** दूध, घी, शहद जव पानी, तिल मिला कर देवताओं ऋषियों और पितरों का तपर्ण दरवाजे के निचले भाग पर करते हुये पढें:- **ॐ भूः तृप्यतां, ॐ भुवः तृप्यतां, ॐ स्वः तृप्यताम्, ॐ भू-भुर्वःस्वः तृप्यताम्-ब्रह्मा तृप्यतां रुद्रः तृप्यतां, ईश्वरः तृप्यतां, सदा-शिवः तृप्यतां, पृथिवी तृप्यतां, आपः तृप्यतां, तेजः तृप्यतां,**

वायुः तृप्यतां, सदा-शिवः तृप्यतां, पृथिवी तृप्यतां, आपः तृप्यतां, तेजः तृप्यतां, वायुः तृप्यतां आकाशः तृप्यतां, वाहिं तर्पयामि सूर्य तर्पयामि, सोमं तर्पयामि, वरुणं तर्पयामि, वायुं तर्पयामि कामं तर्पयामि मोक्षं तर्पयामि, सर्वदेवताः तर्पयामि। गले में यज्ञोपवीत रखकर पढें:- **कण्ठोपवीती स्वाहा ऋषिभ्यः** बायाँ यज्ञपवीत रख कर पढें:- **स्वधापितृभ्यः** दायाँ यज्ञोपवीत करके पढें:- **आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्तं बह्माण्डं सचराचरं जगत् तृप्यातु तृप्यतु-एवम्-अस्तु** जीवादान के लिये विष्टिर सहित खोसू अथवा कटोरी में तिलक और तीन फूल डालते हुये पढें:- **सं वः सृजमि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टा-स्तन्वः संसृष्टः प्राणो-अस्तुवः। संयावः प्रियास्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो अस्तु संप्रियाः संप्रियस्तन्वो मम।** दरवाजे के चारों ओर दर्भ अथवा विष्ठर से छिड़कते हुये पढें:- **अश्विनो प्रणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। मित्रावरुणायोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव-बृहस्पतेः प्राणः स-ते प्राणं ददातु तेन जीव। धर्माय, अधर्माय, देहिल्यै खिंखिन्यै मेरु-प्रकार-देवताभ्यः जीवादानं परिकल्पयामि नमः** चावल सहित दर्भ के काँड हाथ में लेकर तीन बार पढें:- **ॐ गं तत्-पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती, प्रचोदयात्-ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य मासस्य पक्षस्य तिथौ वारन्वितायां-धर्मस्य अधर्मस्य देहल्याः खिंखिन्याः मेरु प्राकार-देवतानां द्वार-पूजनं-अहं-किरष्ये ॐ कुरुष्व-**

चावलों को कन्धों से फेंक कर दर्भकाण्ड निर्माल्य में डाल कर दो-दो दर्भकाण्ड-आसन के रूप में डालते हुये पढें:- दरवाजे के दायें ओर **'धर्मस्य'** बायें ओर **"अधर्मस्य"** नीचे की ओर **"देहल्या:"** ऊपर की ओर **"खिं खिन्या:" मेरुप्राकार देव-तानां-इदं आसनं नमः,** दायें हाथ से दो दर्भकाण्ड चावल सहित पकड़ते हुये पढें:- **धमार्य अधर्माय देहिल्यै खिंखिन्यै मेरु-प्राकार-देवताभ्य: युष्मान्-पूजयामि ॐ पूजय,** चावल-फैंक कर केवल दो दर्भ हाथ में रख कर पढें:- **धर्म-अधर्म-देहलिं, खिंखिनिं, मेरु-प्रकार देवता: आवाहय-ष्यामि ॐ आवाहय**-दरवाजे के ऊपर की ओर फूल चढाते हुये पढें:- **आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सुर-पूजितं, सदैव विघ्न हर्तारं सर्वकाम-फलप्रदम् ।** दोनों कन्धों से जव चावल फैंक कर प्राणायाम करके कटोरी में जल डालते हुये पढें:- **पाद्यार्थम्-उदकं नमः, शन्नो-देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये-शंयोर्-अभि-स्त्रवन्तु नः** इसी जल में तिलक सर्वौषधि आदि डाल कर विष्टर से दरवाजे को छिड़कते हुये पढें:- **धमार्य अधमार्य देहिल्यै खिंखिन्यै मेरु प्राकार देवताभ्य: पाद्यं नमः,** पाद्य-के बाकी बचे पानी को निर्माल्य में डाल कर अर्घ्य के लिये कटोरी में पानी डालते हुये पढें:- **शन्नो देवीर्-अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर्-अभि-स्त्रवन्तु नः** इसी कटोरी के पानी में दूध, घी, दही डालते हुये विष्टर से दरवाजे को छिडकते हुये पढें:- **धर्माय अधर्माय देहिल्यै खिंखिन्यै मेरुप्राकार-देवताभ्य: समालभनं गन्धो नमः** दायें बाँये और ऊपर नीचे फूल चढाते हुये पढें:- **धर्माय**

अधर्माय देहिल्यै खिंखिन्यै मेरु-प्रकार-देवताभ्यः अर्घोनमः पुष्पं नमः नमस्कार करते हुये पढें:- **एतासां देवतानां-अर्घ्य- दानाद्यर्चन-विधि सर्वः परिपूर्णः अस्तु** चावल की थाली को जल से छिडकते हुये पढें:- **अन्नं नमः, अन्नं नमः, आज्यं आज्यं अन्नं-अद्य-दिने-अद्य-यथा संकल्पात्-सिद्धिर-अस्तु** अंजलि धारण करते हुये पढें:- **अन्न हीनं क्रियाहीनं विधिहीनं द्रव्य-हीनं, मन्त्र हीनं, यत्-गतं तत् सर्व-अछिन्द्रं सम्पूर्णम्-अस्तु एवम् अस्तु,** खोसु में दायें हाथ की ऊँगलियों के ऊपर से जल डाल कर उसी जल से दरवाजे पर आचमन के रूप में थोड़ा सा जल डालते हुये पढें-: **शन्नो देवीर्-अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर्-अभिस्रवन्तु नः धमार्य अधर्माय देहिल्यै खिंखिन्यै मेरुप्राकार-देवताभ्यः आचमीनयं नमः** फिर से **शन्नो देवीर्-अभीष्टये**-यही मन्त्र पढ कर कटोरी में नया अर्घ जल तथा दक्षिणा डालते हुये पढें:- **धर्माय अधर्माय देहिल्यै खिंखिन्यै मेरुप्राकार देवताभ्यः दक्षिणायै तिल-हिरण्य-रजत-निष्कर्ण ददानि**-कुछ और दक्षिणा डालते हुये पढें:- **एता देवताः सदक्षिणा-न्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।** नैवेद्य के रूप में किशमिश आदि अपर्ण करते हुये पढें:- **धमार्य अधर्माय देहिल्यै खिंखिन्यै मेरु-प्राकार- देवताभ्यः ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।** अच्छिद्र न करें। तपर्ण करते हुये तीन बार पढें:- **नमो ब्रह्मणे, नमो-अस्तु-अग्नये, नमः पृथिव्यै, नम औषधीभ्यः नमो वाचे वाचस्पतये नमो विष्णवे, बृहते**

कृणोमि, इति-एतासाम्-एव देवतानां सार्ष्टिं सायुज्यं सलोकतां-सामीप्यम्-अप्नोति य एवं विद्वान् स्वाध्यायम्-अधीते। 3। नमस्कार करते हुये पढें:- **मन्त्रहीनं-क्रियाहीनं विधिहीनं च यत् गतम्, तत्सर्वं क्षम्यतां देव कृपया परमेश्वर। यत्-अक्षर पद भ्रष्टं मात्रा हीनं च यत् गतम् त्वया तत् क्षम्यतां देव कृपया पुरुषोत्तम। उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।**

ऊपर लिखी विधी के अनुसार दरवाजे की पूजा करके **'सर्वमंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके शरण्ये त्र्यम्बके गोरि नारायणि नमोस्तु ते'** इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये पहले से ही नियत किये हुये कमरे में जहां साफ दरी मसनद आदि बिछा हुआ हो, घर के सभी सदस्य भाई बन्धु मित्रादि अपने अपने हाथ में उठाई हुई सामग्री, भगवत् गीता, पानी का घड़ा दूध, फल चावल आदि विशेषतया इष्ट देवी, गुरु आदि का फोटू हाथ में लेकर प्रवेश करें कमरे में किसी उच्च स्थान अथवा कुर्सी आदि पर यह फोटो सजा कर रखें उस के सामने सभी सामग्री रत्नदीप आदि तरतीब से रखें:- झाडू चक्की एक ओर कोने में रखें, घर के सभी सदस्य खड़े रहे-यजमान को चाहिये महालक्ष्मी देवी अथवा गुरु आदिके फोटो को तिलक लगा कर फूल की मालायें अपर्ण करें-**ॐ जय जगदीश** से सामूहिक आरती करें, नाबद किशमिश-बर्फी आदि नैवेद्य के रूप में इष्ट देवी को अपर्ण कीजिये- उसी प्रसाद में से सभी को थोड़ा-थोड़ा प्रसाद बांट कर परिवार के व्यक्तियों को तिलक लगा कर नारीवन बांधें- यह कार्यक्रम समाप्त करके रसोई में जाकर **अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर-प्राण-वल्लभे, ज्ञान-वैराग्य-सम्पूर्णे अन्न-पूर्णे नमोस्तु ते।** "गैस या

चूल्हे के ऊपर के भाग पर सिन्दूर से **"श्रीः"** लिखें अर्घ फूल चढाते हुये पढें:- **अन्नपूर्णाभगवत्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।**

रोठ तहर आदि में असली घी डाला हुआ थालियों में भर कर इष्टदेवी अथवा महालक्ष्मी के सामने लायें और पुस्तक के पृष्ठ 19 से प्रेप्युन पढें:- चुटू मकान के छत पर रखें प्रसाद सभी में बाँटिये-यजमान तथा पत्नीको पूजा की समाप्ति तक व्रत रखना चाहिये- आप इस शुभ दिन पर किसी प्रकार की हिंसा अथवा हिंसा से प्राप्त मांस आदि का प्रयोग न करें, बल्कि आज से आप घर में नित्य यज्ञ रचाने की प्रतिज्ञा करें यज्ञ से मतलब है - आप तीन बातों का व्रत लीजिये- **"यज्ञ-देवपूजा-संगीतकरण-दानेषु-** यह तीन नियम है, (1) देव पूजन घर में नित्य भगवत् नाम का कीर्तन (2) परिवार के सदस्यों में सच्चा संगठन (3) यथाशक्ति दान जिस घर में इन तीन नियमों का पालन होगा वहाँ विष्णु भगवान् लक्ष्मी सहित निवास करता है।

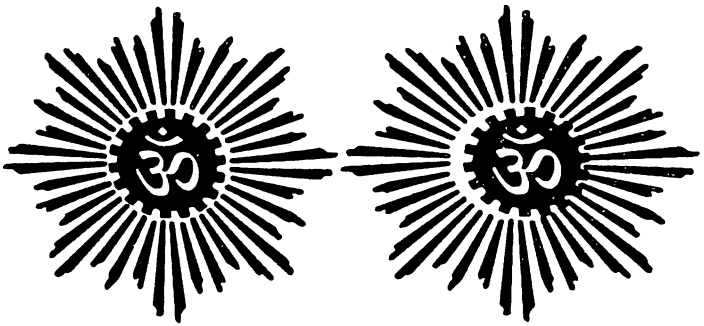

दीपमाला पूजाविधि

पृष्ठ नं० 5 से दीपधूप समाप्त करके विष्टर अथवा दर्भ सहित कटोरी में तिलक और तीन फूल डालते हुये पढें :- **सं वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टा स्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः। सं यावः प्रिया-स्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः। आत्मावो अस्तु सं प्रियः सं प्रियास्तन्वो मम।** किसी पात्र में रुपये 11 या 21 रख कर उन को कटोरी के जल से छिडकते हुये पढें :- **अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव, बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणं ददातु तेन जीव, श्रीमहालक्ष्म्यै-जीवादानं परिकल्पयामि नमः** चावल सहित दो दर्भ काण्ड हाथ में लेते हुये तीन बार पढें :- **श्रियै, विह्महे, कमलवासिन्यै धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।3। तत् सत् ब्रह्म अद्य-तावत् तिथौ अद्य मासस्य पक्षस्य तिथौ वारान्वितायां श्री महालक्ष्म्याः अर्चां-अहं करिष्ये ॐ कुरुष्व** आसन के रूप में दो पुष्प अथवा दर्भ डालते हुये पढें:- **श्री महालक्ष्म्याः इदम्-आसनं नमः** चावल सहित दो दर्भ अथवा फूल हाथ में पकडते हुये पढ़े:- **श्री महालक्ष्म्यै युष्मान् पूजयामि ॐ पूजय** चावल कन्धों से फेंक कर केवल दर्भ हाथ में रखकर पढें :- **ॐ सर्वलोकस्य जननीं शूलहस्तां त्रिलोचनाम् सर्वदेवमयीम्-ईशां देवीम्-आवाहया-म्यहम्। श्रीमहालक्ष्मीं-आवाह यिष्यामि ॐ आवाहय**

चावल कन्धों से फेंक कर दर्भ निर्माल्य में डाल कर पढें:- **पाद्यार्थम्-उदकं नमः-शन्नोदेवीर्-अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर्-अभी स्रवन्तु नः** इसी जल में लाय केसर, सर्वौषधि दर्भ डालकर रुपयो पर पानी की धारा डालते हुये पढें:- **गंगादि-तीर्थ सम्भूतं गन्ध पुष्पादि-सं-युतम्-पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु-नमोस्तुते श्रीमहालक्ष्म्यै पाद्यं नमः ।** पाद्य से बचा हुआ जल निर्माल्य में डालकर फिर से अर्घ्य के लिये कटोरी में जल डालते हुये पढें :- **शन्नो देवीर्-अभीष्टये-आपो भवन्तु पीतये शंयोर्-अभिस्रवन्तु नः** इसी कटोरी में दूध दर्भ घी चावल सर्षप डालकर रुपयों पर जलधारा डालते हुये पढें :- **अष्ट-गन्ध समायुक्तं स्वर्णपात्र-प्रपूरितम्-अर्घ्यं गृहाण मत्-दत्तं महालक्ष्म्यै नमोस्तुते महा-लक्ष्म्यै इदं वो-अर्घ्यं नमः** शुद्ध जल आचमन के रूप में डालते हुये पढें :- **श्री महालक्ष्म्यै आचमनीयं नमः,** लाय केसर आदि से मिला हुआ जल महालक्ष्मी पर डालते हुये पढें:- **पंचामृत-समायुक्तं जाह्नवी सलिलं शुभम्-गृहाण विश्वजननि स्नानार्थं भक्तव-त्सले-महालक्ष्म्यै अष्टंग स्नानं परिकल्पयामि नमः,** रुपयों को साफ करके आसन पर बिठाते हुये पढें :- **आसनाय नमः कमलासनाय नमः शतदलपद्मासनाय नमः, सहस्रदल-पद्मासनाय नमः** तिलक लगाते हुये पढें :- **कुं-कुमं कामदं दिव्यं कुं कुमं कामरूपिणम्-अखण्ड-काम-सौभाग्यं कुं-कुमं प्रतिह्यताम् ।। गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषि-णीं-ईश्वरीं सर्वभूतानां**

ताम्-इहोपह्वये श्रियम् महालक्ष्म्यै समालभनं गन्धो नमः । बही खाता, पेटी, दवात, कलम को भी तिलक लगायें, दरवाजे के ऊपर सिन्दूर से **"श्रीः"** बही खाते दवात कलम आदि पर भी फूल अर्घ्य चढाते हुये पढें-**नमोस्तु ते महामाये श्री-पीठ-सुर-पूजिते-शंख-चक्र गदा-हस्ते महालक्ष्मि नमोस्तुते श्री महालक्ष्म्यै अर्घो नमः पुष्पं नमः** धूप कर्पूर रत्नदीप घुमाते हुये पढ़ें :- **तत् सत् ब्रह्म अद्य-तावत् तिथौ अद्य कार्तिक-मासस्य कृष्ण-पक्षस्य चतुर्दश्यां** (अथवा) **अमावस्यां** वार का नाम लेकर **श्री-महालक्ष्म्यै धुपं कर्पूर रत्नदीपं परिकल्पयामि नमः ।** अब चामर करते हुये **"लीलारब्ध"** सभी श्लोक तथा **"ॐ जय जगदीश"** आरती पढें :- **श्री महालक्ष्म्यै चामरं परिकल्पयामि नमः** तर्पण करते हुये पढें :- **एताभ्यः देवताभ्यः दीपधूप संकल्पात्-सिद्धिर्-अस्तु दीपो नमः धूपो नमः** वस्त्र चढाते हुये नमस्कार करते हुये पढें :- **श्री महालक्ष्म्यै वासोनमः एतासां देवतानां-अर्घ्यदाना-द्यर्चन-विधिः सर्वः परिपूर्णः-अस्तु ।** नमस्कार करते हुये पढें :- **उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा अष्टांगं नमस्कारं करोमि नमः** तर्पण करके अंजलिधारण करते हुये पढें :- **अन्नं अन्नं नमः आज्यं आज्यं अन्नं, अद्यदिने अद्य यथा संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु अन्न-हीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं मन्त्रहीनं यत्-गतं तत्-सर्वम्-अछिद्रम्-सर्म्पूणम्-अस्तु**-कटोरी में जल डालते हुये पढें:- **शन्नो देवीर्-अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये**

शंयोर्-अभिस्रवन्तु नः रुपयो पर यही जल डालते हुये पढें :- **एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु** नैवेद्य की पूरिया बर्फी आदि थाली में रख कर पृ० 19 से 24 तक सारा प्रेप्युन पढ कर फिर से पढें:- **तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य कार्तिकमासस्य कृष्णपक्षस्य अमावस्यां..... वारान्वितायां श्रीमहालक्ष्म्यै दीपमाला महोत्सव-देवताभ्यः मिष्टान्नं पक्वान्नं ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः** चुटू आदि को भी तिलक पुष्प आदि डालकर दो दर्भ (फूल) हाथ में लेकर तीन बार पढें :- **श्रियै विद्महे कमलवासिन्यै धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्** (3) फिर से पढें:- **ॐ तत्-सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य कार्तिकमासस्य कृष्णपक्षस्य अमावस्यां.....वारान्वितायां दीपमाला-महोत्सव देवतानां श्रीमहालक्ष्म्याः पूजनं-अछिद्रं सम्पूर्णम्-अस्तु एवम् अस्तु** नमस्कार करते हुये पढें :- **आह्वानं नैवजानामि नैवजानामि पूजनं, पूजाभागं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा नमस्कारं करोमि नमः** तर्पण करते हुये पढें :- **नमो ब्रह्मणे नमो-अस्तु-अग्नये, नमः पृथिव्यै, नम औषधीभ्यः नमो वाचे नमोवाचस्पतये नमो विष्णवे बृहते, कृणोमि, इति-एतासाम्-एव-देवतानां-सार्ष्टि-सायुज्यं सलोकतां सामीप्यं-आप्नोति-य एवं विद्वान् स्वाध्या-यम् अधीते ।**

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

श्राद्ध संकल्प विधिः

पितर का नाम लेने की विधिः- जैसे आप का गोत्र है **"दर कापिष्ठल मानव"** संकल्प के निमित्त पितर के नाम के साथ विभक्ति का प्रयोग होता है जैसेः- **पितुः रामदरस्य कापिष्टल-मानवस्य, पितामहस्य, कृष्णदरस्य कापिष्ठल मानवस्य, प्रपितामहस्य वासुदेवदस्य कापिलष्ठल मानवस्य,** माता के लियेः- **मातुः लीलावती देव्या; कापिष्ठलमानव्याः पितामह्याः अमरावती देव्याः कापिष्ठल-मानव्याः, प्रपिता मह्याः कृष्णादेव्याः कापिष्ठ-लमानव्याः।**

संकल्पविधिः

5-9 पृष्ट से दीपधूप करके बायाँ यज्ञोपवीत रख कर तिलसहित जल से तर्पण करते हुये पढेंः- **ॐ तत्-सत्-ब्रह्म-अद्यतावत् तिथौ-अद्य मासस्य पक्षस्य तिथौ वासरान्वितायां** ऊपर लिखी हुई विधि से **पित्रे पितामहाय** इत्यादि 12 पितरों के नाम पढ़ कर अन्त में **समस्त-माता-पितृम्यो द्वादश-दैवतेभ्यः पितृभ्यो दीपः स्वधः धूपः स्वधा**-यह तर्पण करके फिर से पढेः- **ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य मासस्य पक्षस्य तिथौ वासरान्वितायाम्,** अब-जिस पितर का श्राद्ध हो केवल उसी पितर का नाम लेकर **पित्रे** अथवा **पितामहाय** अथवा

प्रपितामहाय रामदर-कापिष्ठलमानवाय दीपः स्वधा धूपः स्वधा । अब चावल फल वस्त्र दक्षिणादि सहित किसी पात्र में अपने सामने रख कर, तिल सहित पानी दायें हाथ में लेकर पढें :- **ॐ तत्-सत् ब्रह्म तिथौ अद्य मासस्य.....तिथौ वासरे** पिता का श्राद्ध हो तो **पितुः रामदरस्य कापिष्ठल-मानवस्य,** यदि माता का हो तो **लीलावत्याः कापिष्ठल-मानव्याः सांवत्सरिके श्राद्धे अन्नं सवस्त्रं फलमूल-दक्षिणा-सहितं संकल्पयामि ।** यदि काम्बर पछ में संकल्प करना हो तो पढिये:- **ॐ तत् सत् ब्रह्म तिथौ अद्य मासस्य तिथौ वासरे आपरिपाके कन्यार्कगते श्राद्धे पित्रे पितामहाय** इत्यादि नाम लेकर **समस्तमाता पितृभ्याः दीपः स्वधा धूपः स्वधा,** फिर से पढें :- **ॐ तत्-सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य** मास पक्ष तिथि वार इत्यादि का नाम लेकर और जिस पितर का श्राद्ध हो केवल उसी का नाम षष्ठीविभक्ति में लेकर इस प्रकार पढें :- **पितुः रामदरस्य कापिष्ठल मानवस्य अथवा लीलावती देव्याः कापिष्ठलमानव्याः आपरिपाके कन्या-र्कगते श्राद्धे अन्नं सवस्त्रं फलमूलसहितं संकल्पयामि,** अन्त में फिर से दायाँ यज्ञोपवीत रख कर जल से तर्पण करते तीन बार पढें :- **नमो वाचे, नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे बृहते कृणोमि । इति-एतासाम्-एव देवतानां सार्ष्टिं सायुज्यं सलोकताम् सामीप्यं-आप्नोति य एवं विद्वान् स्वाध्यायम्-अधीते (3)**

ॐ शान्तिः शन्तिः शान्तिः ।

तर्पण अथवा श्राद्ध के लिये पितरों के नाम लेने की विधि:

जिस पितर का श्राद्ध संकल्प करना हो, उस के पहले के छ: पितृपक्ष के और छ: मातृपक्ष के पितरों का तर्पण करना होता है, इसके अतिरिक्त और सम्बन्धित पितरों का भी एक एक नाम लेकर तर्पण किया जाता है, 12 पितरों के तर्पण करने की विधि निम्नलिखित है।

पितृपक्ष के छ: पितर इस प्रकार होते है: (1) **पित्रे** (पिता) **पितामहाय** (दादा) **प्रपितामहाय** (पडदादा) (2) **मात्रे** (माता) **पिता मह्यै** (दादी) **प्रपितामह्यै** (पडदादी) मातृपक्ष के छ: पितर इस प्रकार होते है - (1) **मातामहाय** (नाना) **प्रमातामहाय** (माँ का दादा), **वृद्धप्रमाता महाय** (पडदादा) (2) **माता मह्यै** (नानी) **प्रमातामह्यै** (माँ की दादी) **वृद्ध प्रमाता-मह्यै** (माँ की पडदादी) यदि भाई, भाई की पत्नी, चाचा, चाची का देहान्त हुआ हो तो तर्पण में नाम लेने की विधि इस प्रकार है, **भ्रात्रे, पित्रे, पितामहाय। भ्रातृव्य-पत्न्यै मात्रे पितामह्यै पितृव्याय, पितामहाय, प्रपितामहाय, पितृपत्न्यै, पितामह्यै, प्रपितमाह्यै।** तर्पण करते समय **"गोत्र"** पितरों के नाम के साथ जोडा जाता है, जैसे किसी का गोत्र है, दर कापिष्ठल मानव, गोत्र से पहले पितर का नाम जोड़िये, परन्तु गोत्र में पहला पद उपपद कहलाता है, उस को पृथक् जोडिये जैसे **रामदराय कापिष्ठल मानवाय,** जैसे किसी का गोत्र है दत्तात्रेय, "दत्त" उपपद को अलग कीजिये और आत्रेय को अलग फिर ऐसे जोडिये **रामदत्ताय-आत्रेयाय।** जब स्त्रीलिंग माता आदि का नाम लेना हो तो माता के नाम के साथ उपपद (दत) न जोड़ के देवी शब्द का प्रयोग कीजिये जैसे **लीलावती**

देव्यै कापिष्टल मानव्यै, अथवा **लीलावती देव्यै आत्रेयायै,** या **लीलावती देव्यै भारध्वाज्यै** तर्पण करते समय ऊपरलिखित 12 पितरों का तर्पण करना आवश्यक होता है, यदि किसी के पिता का देहान्त हुआ है और पितामह जीवित है, तो पितामह का नाम छोड़कर **प्रपितामह्यै, वृद्ध प्रपितामह्यै** का नाम लीजिये। तर्पण के समय पितरों का नाम लेते हुये व्याकरण के अनुसार चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है और जिस पितर के निमित्त अन्न आदि का संकल्प करना हो तो षष्टी विभक्ति का प्रयोग कीजिये-

जैसे-पिता का नाम **"राम"** है दादा का नाम **"कृष्ण"** है, पडदादा **"वासुदेव"** और गोत्र **दरकापिष्ठलमानव**-तर्पण में नाम प्रयोग करने की विधि- **पित्रे** (1) **रामदराय कापिष्ठ लमानवाय,** (2) **पितामहाय कृष्णदराय कापिष्ठलमानवाय, प्रपितामहाय वासुदेवाय कापिष्टल मानवाय।** मानिये गोत्र है यही "दर कापिष्ठल मानव" माता का नाम है लीलावती, **मात्रे-लीलावती देव्यै कापिष्ठल मानव्यै। पितामह्यै अमरा-वतीदेव्यै कापिष्ठल मानव्यै। प्रपितामह्यै कृष्णादैवयै कापिष्ठल-मानव्यै।** मानिये गोत्र है:- "दत्तात्रेय" यदि पिता जीवित है, पितामह का नाम गोविन्द है प्रपितामह का नाम "दामदोर" है वृद्ध प्रपितामह का नाम "नाथ" है तर्पण में नाम लेन का ढँग ऐसे है - **पितामहाय गोविन्द दत्ताय आत्रेयाय प्रपितामहाय दामदोर-दत्ताय आत्रेयाय। वृद्ध प्रपितामहाय नाथदत्ताय आत्रेयाय।**

इति तर्पण विधि:

पंचगव्य बनाने की विधिः

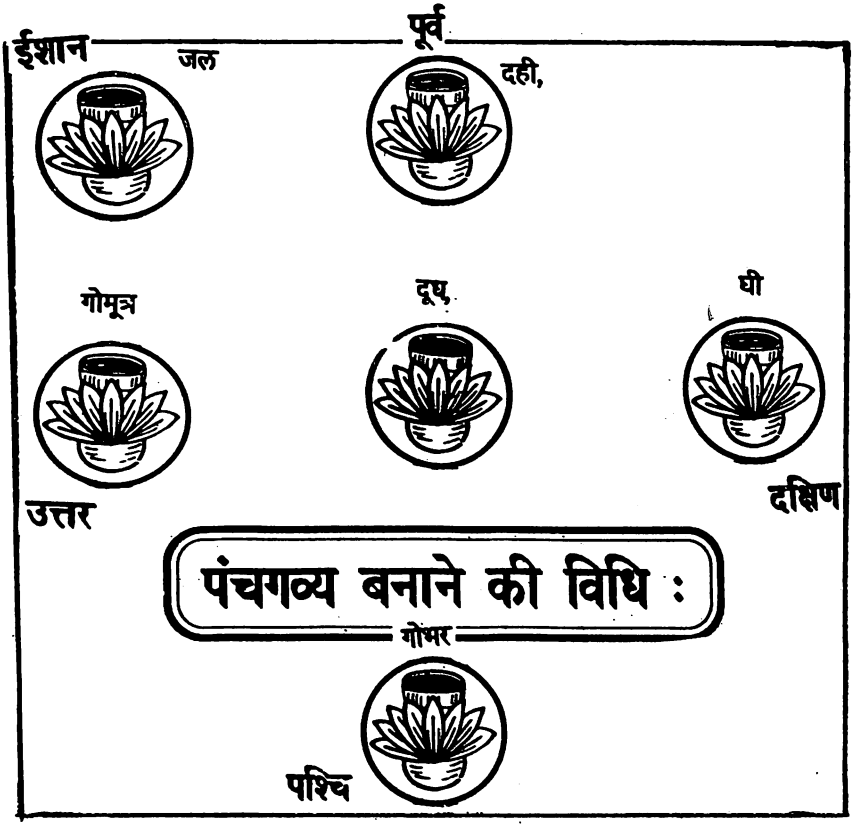

गाय की पांच वस्तुयें पंचगव्य कहलाती है, वे पांच वस्तुयें हैं (1) **गोमूत्र,** (2) **गोभर** (3) **दूध** (4) **दही** (5) **घी,** काँस के पात्र में ये पांच वस्तुयें छटे पात्र में दर्भयुक्त पानी, यानी कुल छः वस्तुयें समानभाग में चूने से लिखे हुये अष्टदलों पर क्रमशः गोमूत्र, गोभर, दूध, दही, घी, तथा दर्भसहित जल अष्टदलों पर रखिये।

(1) **ॐ भूर्भुवः स्वः, तत्-सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य**

धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् । इस मन्त्र से उत्तर के अष्टदल पर गोमूत्र का पात्र रखिये।

(2) **गन्ध-द्वारां-दुराधर्षीं नित्यपुष्टां करी-षिणीम्, ईश्वरीं सर्वभूतानां ताम्-इहोपहवये श्रियम्,** इस मन्त्र से पश्चिम के अष्टदल पर गोभर का पात्र रखिये।

(3) **आप्या-यस्व समेतु ते विश्वतः । भवा वाजस्य संगथे ।** इस मन्त्र से दूध का पात्र बीच में रखिये।

(4) **दधिक्राव्णो-अकारिषं जिष्णोर्-अश्वस्य वाजिनः सुरभि-नो मुखाकरत्-प्राण आयूंषितारिषत्**-इस मन्त्र से पूर्व के अष्टदल पर दही रखिये।

(5) **तेजोसि शुक्रम्-असि ज्योतिर्-असि धाम-नामासि। प्रियं देवानां-अनादिष्टं देवयजनं देवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृहणामि, देवेभ्यस्त्वा यज्ञेभ्यो गृहणामि** इस मन्त्र से दक्षिण के अष्टदल पर घी का पात्र रखें।

(6) **देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे-श्विनो-र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां आददे** इस मन्त्र से ईशान कोण पर दर्भ या विष्टर सहित पानी का पात्र रखिये।

पाँच कांस्यपात्रों में रखे हुये गोमूत्र के मिलाने की विधि। ऊपरलिखित मंत्र नं० 1 के **ॐ भूर्भवः स्वः** मन्त्र से गोमूत्र का पात्र हाथ में उठा कर, गोभर के पात्र में डालते समय नं० (1) और नं० (2) का मन्त्र पढिये, अब इस गोमूत्र, गोमय मिलान का पात्र हाथ में उठा कर दूध के पात्र में डालते हुये नं० (1) नं० (2) तथा नं० (3) का मन्त्र

पढिये, अब यह तीन गोमूत्र, गोभर, दूध का पात्र हाथ में उठाकर दही के पात्र में डालते हुये नं० (1) नं० (2) नं० (3) नं० 4 का मन्त्र पढिये, अब यह चार गोमूत्रं, गोमय, दूध, दही का पात्र हाथ में उठा कर घी के पात्र में डालते हुए नं० (1) **ॐ भूभुर्वः स्वः** इत्यादि नं० 2 **गन्धद्वारां**..... नं० 3 **आप्यायस्व** नं० 4 **दधिक्राव्णो**..... नं० 5 **तेजोसि** इत्यादि ये पाँचों वस्तुये विष्टरसहित पानी के पात्र में डालकर दर्भ अथवा दूर्वा से आलोडित करते हुये पढें :- **आपो हिष्ठा मयोभुवा-स्तान ऊर्जे दधातन महे रणाय चक्षसे, योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते ह नः, उशतीर् इव मातरः, तस्मा-अरंग माम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः।** पंचगव्य चक्र देखिये पृष्ठ 71 पर इस विधि से पंचगव्य बना कर "ॐ शब्द का उच्चारण करके तीन बार पीना चाहिये। पीने का पात्र होना चाहिये ताँबे का, सोने का, चाँदी का अथवा कमल का पत्ता।

पन्न पूजा विधिः

पूजा सामग्री - धूप, रत्नदीप, कर्पूर, सिन्दूर, नारीवन, दूध, दही, फूल, चावल जव, एक थाली में दूर्वा (द्रमुन) दूसरी थाली में फूल आदि, लड़की के हाथ से कपास का काता हुआ धागा (पन्न) पूजा स्थान पर एक घड़वा रख कर उस घड़वे को सिन्दूर के तिलक, फूल की माला, नारीवन आदि से सजा के रखिये, उसी घड़े में पानी, दूध जाफल या सुफारी, एक रुपये का सिक्का, तथा थोड़ा सा द्रमुन डालें, घडवे को गणेश जी तथा ऋद्धि-सिद्धि अथवा लक्ष्मी का रूप मान कर पूर्व की ओर मुख करके, आसन पर बैठकर पूजा आरम्भ कीजिये, लड़की के हाथ से काता

हुआ धागा भी इसी घडवे के ऊपर रखिये। इस पुस्तक के पृष्ठ नं० 5-9 से सारा दीप धूप करके - एक कटोरी में थोड़ा सा तिलक तथा तीन फूल डालते हुये पढें :- **"सं वः सृजामि हृदयं, संसृष्ट मनो अस्तु वः, संसृष्टास्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः"** इसी जल से घडवे को छींटे देते हुये पढें :- **अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव, मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव, बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणः ददातु तेन जीव,** जवदाने तथा फूल हाथ में लेते हुये तीन बार पढे :- **"तत्पुरुषाय-विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ।3। श्रियै विद्महे, कमलवासिन्यै धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।3। भगवतः विनायकस्य, एकदन्तस्य-कृष्णपिंगलस्य गजाननस्य लम्बोदरस्य भालचन्द्रस्य हेरम्बस्य आखुरथस्य विघ्नेशस्य विघ्नभक्षस्य वल्लभासहितस्य श्रीमहागणेशस्य, सिद्धलक्ष्म्याः महालक्ष्म्याः, अर्चाम्-अहंकरिष्ये ॐ कृरुष्व।** आसन के रूप में दर्भ या फूल डालते हुये पढें :- **ॐ गणानान्तवा-गणपतिं हवामहे, कविं कवीनां उपमश्रवस्तमं ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः श्रण्वन्-ऊतिभिः सीद सादनम्, भगवतः विनायकस्य वल्लभासहितस्य श्री महागणेशस्य, सिद्धलक्ष्म्याः महालक्ष्म्याः आसनं नमः,** फिर से जव तथा चावल के दाने हाथ में लेकर पढें:- **ॐ गणानान्तवा गणपतिं हवामहे, कविं कवीनां उपम-श्रवस्तमं ज्येष्ठराजं**

ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः श्रण्वन् ऊतिभिः सीद सादनम्, भगवते विनायकाय वल्लभासहिताय श्रीमहागणेशाय, सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै युष्मान् वः पूजयामि ॐ पूजय, जव तथा चावल के दाने कन्धों से फेंकते पढें:- **भगवन्तं विनायकं वल्लभासहितं श्री महागणेशं सिद्धलक्ष्मीं महालक्ष्मीं – आवाहयिष्यामि ॐ आवाहय,** फूल घडवे पर गणेश जी को चढ़ाते हुये पढें - **शैलेश्वरस्य तनयार्भक–भक्त–विघ्न, नाशाय–हस्त–धृतदण्ड–कुठारपाश, द्वारेश–सर्वगणनायक पद्महस्त, पूजां गृहाण भगवन् भव मेद्य तुष्टः। सर्वलोकस्य जननीं शूलहस्तां त्रिलोच–नाम् सर्वदेवमयीं–ईशां देवीम्– आवाह–याम्यहम्।** प्राणयाम करके अब पाद्य के लिये कटोरी में दूध पानी लाय आदि डाल कर उसी पानी से घडवे को छिड़कते हुये पढें :- **ॐ गणानान्तवा गणपतिं हवामहे कविं कवीनां उपमश्रवस्तमं ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः श्रण्वन् ऊतिभिः सीद सादनम्। भगवते विनायकाय वल्लभासहिताय श्री महागणेशाय सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै पाद्यं नमः,** फिर से अर्घ्य के लिये कटोरी में नया जल दूध लाय सर्वौषधि आदि डालकर घडवे को दर्भ अथवा पुष्प से छिड़कते हुये पढें:- **गणानान्तवा....** सारा मन्त्र पढ कर फिर से पढें:- **भगवन् विनायक वल्लभासहित श्री–महागणेश सिद्धलक्ष्मि महालक्ष्मि इदं वो–अर्घ्यं नमः,** फिर से घडवे पर जल धारा डालते हुये पढें:- **ॐ गणानान्तवा गणपतिं हवामहे.....।** यह मन्त्र पढकर फिर

से पढें :- **भगवते विनायकाय वल्लभासहिताय श्री महागणेशाय, सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै मन्त्रस्नानीयं नमः** फूल वस्त्र रूप में अर्पण करते हुये पढें - **भगवते विनायकाय वल्लभासहिताय महागणेशाय सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै वस्त्रं परिकल्पयामि नमः,** तिलक अर्ध फूल घडवे को लगाते हुये पढे - **भगवते विनायकाय वल्लभासहिताय श्री महागणेशाय, सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः** धूप अर्पण करते हुये पढें :- **ॐ गणानान्तवा गणपतिं हवामहे कविं कवीनां, उपमश्रवस्तमं ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः श्रण्वन् ऊतिभिः सीद सादनम् । भगवते विनायकाय वल्लभासहिताय श्रीमहागणेशाय सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै धूपं परिकल्पयामि नमः,** रत्नदीप घुमाते हुये पढें :- **ॐ गणणान्त्वा..... भगवते विनायकाय वल्लभासहिताय श्री महागणेशाय रत्नदीपं कर्पुरं परिकल्पयामि नमः** चामर करते हुये - जन्त्री से गणेशस्तुति पढिये :- उसके साथ ही **"लीलारब्ध"** भी पढ़कर फिर से पढ़िये **भगवते विनायकाय वल्लभासहिताय श्रीमहागणेशाय सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै, चामरं छत्रं परिकल्पयामि** फिर से पढिये :- **भगवते विनायकाय वल्लभासहिताय श्रीमहागणेशाय सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै, चामरं छत्रं परिकल्पयामि** तर्पण करते हुये पढें :- **एताभ्यो देवताम्यो धूपोनमः दीपो नमः । अर्घ्यदाना द्यर्चनविधिः सर्वः परिपूर्ण अस्तु** नमस्कार करते हुये पढें:- **उभाभ्यां**

जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा मनसा नमस्कारं करोमि नमः तर्पण करते हुये पढें:- **अन्नं नमः अन्नं नमः आज्यम्-आज्यम् अद्य दिने अद्य यथा संकल्पात् सिद्धिर-अस्तु। अन्न हीनं क्रियाहीनं विधिहीनं द्रव्यहीनं मन्त्रहीनं च यत् गतं तत्सर्व-अछिद्रं सम्पूर्णम्-अस्तु एवम्-अस्तु।** कटोरी से घडवे पर थोडी सी जलधारा डालते हुये पढें :- **भगवते विनायकाय वल्लभासहिताय श्री महागणेशाय सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै अपोशानं नमः आचमनीय नमः,** फिर से कटोरी में जल तथा दक्षिणा अर्पण करते हुये पढें :- **भगवते विनायकाय वल्लभासहिताय श्री महागणेशाय सिद्धि-लक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै दक्षिणायै तिल हिरण्य-रजत निष्कर्णं ददानि,** और भी कुछ सिक्के डालते हुये पढें :- **एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।**

सभी परिवार के सदस्यों को तिलक लगाकर नारीवन बांधिये- अब सभी पूडियाँ सवा सेर आदि जो आप ने प्रसाद के रूप में बनाया है थालियों में भरकर भगवान् के सामने लाइये - एक सावसेर और भी कुछ प्रसाद घडवे के सामने रखिये, घर के सदस्यों भाई बन्धुओं मित्रों को पूजा के स्थान पर कथा सुनने के लिये बिठा कर उन को फूल तथा थोड़ा-थोड़ा द्रमुनघास हाथ में दीजिये, सभी श्रोताओं को चाहिये अंजलि में फूल और द्रमुन पकड़ कर श्रद्धा से पन्न की कथा सुने, कोई सदस्य जो यह पन्न कथा अच्छी प्रकार से पढ सके और जिस को "पन्न पूजा" के यज्ञ की श्रद्धा हो कथा करे - कथा के अन्त में हाथ में ली हुई दूर्वा फूल आदि घडवे पर डालते हुये पढें:- **उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।**

पूडी सवासेर आदि सामने सभी सदस्य प्रसाद की थालियों को स्पर्श करें- इसी पुस्तक के पृष्ठन नं० 19-24 से सारा प्रेप्युन पढ़कर - सामूहिक आरती **"जय जगदीश"** करें फिर से हाथ में फूल लेकर पढें:-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग् भवेत्

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योति-र्गमय मृत्योर्माऽमृतंगमयः।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

"पन्नकथा : एक समय नैमिषारण्य तीर्थ में ऋषियों ने श्रीसूत जी से पूछा, हे मुनिश्रेष्ठ! कोई ऐसा व्रत अथवा उपाय बतलाइये जिससे संसार की सभी मानवजाति थोड़े से ही समय में किसी सरल उपाय से मनोवांच्छित फल तथा मानसिक शान्ति प्राप्त कर सके, सर्वशास्त्रज्ञाता श्री सूत जी बोले हे ऋषियो ! आप ने मानवजाति के हित की बात पूछी अब मैं उस व्रत को आप लोगों में कहूँगा - अतः आप ध्यान से सुनिये - काशी नगरी में एक निर्धन ब्राह्मण रहता था, वह अति निर्धन होने के कारण भूख और प्यास से पीड़ित घूमता रहता था, पूर्वजन्म के किसी शुभ संस्कार से भगवान् आदि देव श्री गणेश जी का स्मरण प्रायः करता ही रहता था, उस ब्राह्मण को इस दुर्दशा से मुक्त करने के निमित्त सभी दुःखों तथा विघ्नों को दूर करने वाले श्री गणेश जी ने ब्राह्मण का रूप धारण कर उस के पास आकर आदर के साथ पूछा - हे ब्राह्मण देवता ! आप ऐसी शोचनीय तथा दुःखी दशा में क्यों घूमते हैं, आप मुझ से कहो मैं सुनना चाहता हूँ, ब्राह्मण बोला मैं बहुत निर्धन हूँ, तथा मेरा कोई पुत्र भी नहीं है जो मेरी कुछ सेवा करता, मेरा शरीर भी रोगी है तथा मेरी पत्नी भी शरीर के रोगों और धन के अभाव से दुःखी रहती है - हे दयालु, ब्राह्मण देवता ! यदि आप इस कष्ट से हमें निकालने का कोई उपाय जानते हैं तो कृपा करके

मुझे बताइये। वृद्ध ब्राह्मण बोला – गणेश जी, जो ऋद्धि सिद्धि के स्वामी है तथा जो विघ्नहर्ता माना जाता है – उसी आदिदेव गणेश जी का व्रत धारण करने से आप को अवश्य मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी – यह गणेश जी का व्रत जिसको **"सिद्धि विनायक व्रत"** कहते हैं भाद्रशुक्लपक्ष चतुर्थी को किया जाता है, यदि इस चतुर्थी के दिन रविवार या मंगलवार हो तो इस व्रत को महाचतुर्थी व्रत कहते हैं, यह व्रत **"गणपति चतुर्थी"** नाम से भी प्रसिद्ध है, यह भाद्रपद मास गणेश जी द्वारा ऋद्धि सिद्धि भाँटने का मास है अतः इस मास में शुक्लपक्ष में किसी शुभ दिन पर गणेशपूजन तथा मोदक आदि गणेश जी को अर्पण करने से भक्तों की हर एक मनोकमना सिद्ध होती है – यह त्यौहार काश्मीर में बड़े धूमधाम तथा श्रद्धा से मनाया जाता है, महाराष्ट्र में भी यह त्यौहार मनाया जाता है। काश्मीर में इस व्रत को **"पन्नदान व्रत"** कहते हैं – गणेशपूजन के अतिरिक्त कश्मीरी पण्डित का इस शुभ दिन पर कलश के घडवे को लड़की के हाथ से काता हुआ नये कपास का धागा बाँधते है, धागे को काश्मीर में 'पन्न' कहते है, चूँकि इस गणेशपूजा में धागा (पन्न) का प्रयोग किया जाता है अतः इस पूजा को **"पन्नदान व्रत"** भी कहते है– यह (धागा) पन्न पूजा में प्रयोग करने का क्या मतलब है – आगे वर्णन करूँगा अभी आप आगे की कथा सुनियें:– हे ब्राह्मण देवता – तुम भाद्र शुक्लपक्ष में विध्यनुसार तथा श्रद्धा से गणेश जी की पूजा करके, अपनी शक्ति के अनुसार शुद्ध घी से पूडिया **"सवासेर"** आदि बनाकर भगवान् को अर्पण करने के पश्चात् अपने परिवार भाई–बन्धुओं, रिश्तेदारों तथा मित्रों में भांटिये, आप निश्चय रखें विधि अनुसार यह **"सिद्धिविनायक व्रत"** अथवा **"पन्नदान व्रत"** करने से आप का दारिद्रय् समाप्त होगा और मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी – ब्राह्मण को सारे व्रत का विधान बतलाकर बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण करने वाले गणेश भगवान् अन्तर्ध्यान हो गये, वृद्ध निर्धन ब्राह्मण ने यह **"पन्नदान व्रत"** करने का दृढ़ संकल्प किया, चूँकि यह मास

भाद्रमास ही चल रहा था अत: मैंने शीघ्रातिशीघ्र यह व्रत मनाना है· इस भावना से ब्राह्मण भिक्षा के लिये निकला, गणेश जी की कृपा से भिक्षा में उसको पर्याप्त धन मिला, उसने आने वाले शुभ मुहूर्त पर ही भाई-बन्धुओं तथा मित्रों को एकत्रित करके यह पन्नदान व्रत किया और हर वर्ष भाद्र शुक्लपक्ष में इस **"पन्नदान व्रत"** को करने की प्रतिज्ञा की। गणेश जी की कृपा से वह ब्राह्मण धनधान्य से सम्पन्न हुआ और उसकी सभी मनोकामनायें सिद्ध हुई सर्वशास्त्र ज्ञाता तपस्वी सूत जी कहते है जो मनुष्य इस **"पन्नदान व्रत"** को करेगा - गणेश जी की कृपा से उसे धनधान्य की प्राप्ति होगी, निर्धन धनी होगा, बन्दी बन्दन से मुक्त हो जायेगा, सन्तानहीनों को सन्तान प्राप्ति होगी, रोगी निरोगी होंगे। विशेषतया इस पन्नदान व्रत के करने से उलझनों में उलझे हुये गृहस्थियों की हर एक उलझन सुलझ जायेगी और हर एक मनोकामना सिद्ध होगी।

कपड़ा कातने बुनने की कला भारत ने ही संसार को दी है

वैदिक काल में ब्रह्मचारी गुरुकुलों में ऋषियों के पास जंगलों में विद्या प्राप्त करते थे जहाँ वह ऋषि विद्याध्ययन के अतिरिक्त उन ब्रह्मचारियों को भिन्न-भिन्न प्रकार की कलायें भी सिखाते थे जिन कलाओं में वस्त्र कातने बुनने की कला सीखना भी उनके लिये आवश्यक होता था जब कि गुरुकुल में ब्रह्मचारी को अपने हाथ का बना कौपीन तथा यज्ञोपवीत (ब्रह्मसूत्र) धारण करना होता था- वेदों में कपास से लेकर वस्त्र बनाने तक की प्रक्रिया जिन मन्त्रों में दर्ज है वे मन्त्र ब्रह्मचारी को कण्ठस्थ करवाते थे जैसे सूत्र **मेखलां कौपीनं च हस्ते संस्थाप्य ब्रह्मचारिणं वाचयति "खेतीस्त्वा व्यक्षण् कृत्तिका: चक्रतु:.....** इत्यादि। भारत के प्राय: हर एक घर में चरखा होता था, भारतीय महिलायें चरखे

पर कताई के साथ साथ आध्यात्मिक लाभ भी उठाती थी। काश्मीर की आदर्श नारी **ललीश्वरी भगवती** को दैनिक कार्यक्रम में चरखा कातना भी एक आवश्यक कार्यक्रम था, जैसे मानसिक साधना के लिये करमाला उपयोगी होती है ऐसे ही चरखा भी भारत में विशेषतया महिलाओं के आध्यात्मिक लाभ में सहायक रहता था, कश्मीरी महिलायें विशेषतया वैदिक काल से ही इस कला की रक्षा करती आई है, हमारी मातायें मानसिक जप करते हुये चरखे पर धागा (पन्न) कातती थी, धागे को संस्कृत में सूत्र कहते है - उन के हाथ से काता हुआ सूत्र ब्रह्मसूत्र कहलाता था - उस ब्रह्मसूत्र से बने हुये कपड़े को पहन कर मनुष्य कैसा आनन्द प्राप्त करता था उस आनन्द को महात्मा गाँधी जैसे महात्मा ही जानते थे। काश्मीर में कपास प्राय: भाद्रपदमास में तैयार होती थी अत: नये कपास का धागा कन्या के हाथ से काता हुआ आदिदेव गणेश जी की पूजा में अर्पण किया जाता था - देवताओं को अर्पण करके ही नये कपास से वस्त्रादि कातने बुनने का कार्य आरम्भ किया जाता था। कपड़ा कातने बुनने की कला को भारत ने ही प्रकट की है, इस बात को हम भारतीय आज के इस मिशीनरी युग में भूल न जायें इस भावना से काश्मीरी पण्डित इस **"पन्न व्रत"** को मनाते आये हैं।

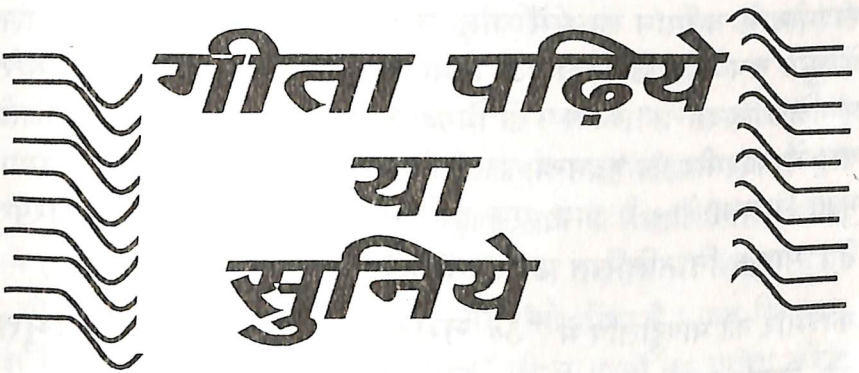

रुद्रमन्त्र

अथवा

यजुर्वेद संहिता का सोलहवाँ अध्याय

वेद ही सब से प्राचीन ग्रन्थ है, इस विषय में कोई मत मतान्तर नहीं है, वेदों का उपास्य देव शिव है, जबकि यजुर्वेद संहिता के सौलहवां अध्याय में शिव की उपासना के 66 मन्त्र हैं, उन सभी मन्त्रों के आराध्य देवता "रुद्र है" - 'रुद्र किसे कहते जिस के बारे में श्वेताश्वतर उपनिषद् में वर्णन हैं:-

"एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुः य इमान् लोकान्-ईशत ईशनीभिः प्रत्यक्-जानन् तिष्ठति संचकोचान्त काले संसृज्य विश्वा भुवनानि गोपाः।

अर्थ : एक ही रुद्र है जो इन सभी लोकों को वश में रखता है अतः ईश्वर कहलाता है, वह रुद्र सब लोकों को उत्पन्न करके अन्तकाल में संहार भी करता है वही सब के भीतर अन्तर्यामी रूप से स्थित है।

काश्मीर में प्राचीन काल में शिव उपासना का ही बोल बाला रहा है, काश्मीरी कर्मकाण्ड की शिवपूजा में "रुद्रमन्त्र" का मुख्यस्थान है। काश्मीर में वर्तमान काल में चालू "रुद्रमन्त्र" सम्भव है आरम्भ काल में शुद्ध रूप में ही उपलब्ध हुआ होगा, परन्तु समय के साथ साथ हमारे प्रचलित "रुद्रमन्त्र" का रूप ही बिगड़ा हुआ हैं। वर्तमान काल में जिस रूप में काश्मीर का रुद्रमन्त्र-हस्तलिखित पाण्डुलिपियों में अथवा छपा हुआ मिलता हैं - वे प्रायः एक-दूसरे से भिन्न तथा त्रुटियों से भरपूर है। पाठक निम्नलिखित उदाहरण देखें :-

काश्मीर की पाण्डुलिपि में **"ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवे बाहुभ्यामुत से नमः उत त इषवे नमः।"**

यजुर्वेद से उद्धृत यही मन्त्र **ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवे उतो त इषवे नमः बाहुभ्यामुत ते नमः।**

पाठक यह न समझें जैसे रामायणादि ग्रन्थों की अर्वाचीन अथवा प्राचीन प्रतियों अथवा भिन्न-भिन्न प्रान्तों में एक ही ग्रन्थ में देशकाल के प्रभाव से कुछ अन्तर होता है ऐसा ही काश्मीर के 'रुद्रमन्त्र' और यजुर्वेद के "रुद्रमन्त्र" में अन्तर होगा, परन्तु पुराणों अथवा रामायण आदि ग्रन्थों की भाँति वेदों में तारतम्य की कोई गुँजाईश नहीं है, जब कि मन्त्रदृष्टा ऋषियों ने जब वेद प्रकट किये उन्होंने इस बात की ओर विशेष ध्यान रखा है, कि ऐसा न हो कि समय व्यतीत होने पर वेद मन्त्रों में किसी प्रकार का विकार आये, वेदमन्त्रों की रक्षा के बारे में ऋषियों ने कहा है **"दृष्टः शब्दः स्वरतो वर्तणतो वा"** यानि वेदमन्त्र यदि शब्द से स्वर से वर्ण से विकृत हो जाये हो वह मन्त्र नहीं रहता है बल्कि वज्र बनता है जो मन्त्र प्रयोग करने वाले का नाश करता है, अतः इस भय से वेद प्रकट होने के समय, वेदमन्त्र जिस रुप में अथवा जिस क्रम में थे, उसी रूप में वर्तमान काल में भी उपलब्ध हैं। वेदमन्त्रों के अर्थ में खेंचातानी बुद्धि के तारतम्य से अवश्य हुई है अथवा देश देशान्तरों के बोलचाल की भिन्नता से मन्त्र के उच्चारण में अन्तर अवश्य पड़ा है, परन्तु मन्त्रों के शब्द वर्ण तथा क्रम (तरतीब) आद्य काल में जैसा था वैसा ही वर्तमान काल में भी है, वेद मन्त्रों को भारत ने ही सुरक्षित नहीं रखा है, बल्कि विदेशों की लाइब्रेरियों में भी जो वेद उपलब्ध है उनमें भी वेदमन्त्र ज्यों के त्यों सुरक्षित हैं। हमने यह रुद्रमन्त्र यजुर्वेद की सोलहवीं अध्याय से नकल किया है और सावधानी से छपवाया है - पाठक बिना किसी हिचकिचाहट के अपने हस्तलिखित अथवा छपे हुये पुराने रुद्रमन्त्र को शुद्ध करें, जबकि आप के हस्तलिखित अथवा छपे हुये पुराने "रुद्रमन्त्र" के ऋचाओं का क्रम तरतीब भी बिगड़ा हुआ है और कई मन्त्रों को तोड़मरोड़ कर आगे पीछे ठोंसा है। जब कि आप यज्ञ में आहुति डालने के लिये "रुद्रमन्त्र" की ऋचाओं का प्रयोग करेंगे तो ऋचा की समाप्ति का "स्वाहा" से आहुति डाला करें।

रुद्रमन्त्र

ॐ नमः शिवाय। प्रणतोस्मि महादेव प्रपन्नोस्मि सदाशिव। निवारय महामृत्युं मृत्युंजय नमोस्तु ते।। देवं सुधा-कलश-सोम करं त्रिनेत्रं, पद्मासनं च वरदा-ऽ भयदं सुशुभ्रम्। शंखा-ऽ भयाब्ज-वर-भूषितया च देव्या, वामेंकितं शमन-भंगहरं नमामि। शुद्ध-स्फटिक-संकाशं, त्रिनेत्रं पंचवक्त्रकम्। गंगाधरं दशभुजं, सर्वाभरण-भूषितम् ।1। नील-ग्रीवं शशां-कां-कं नाग-यज्ञो-पवीतिनम्। व्याघ्र-चर्मोत्तरीयं च, वरेण्यम्-अभय-प्रदम् ।2। कमण्डल्वक्ष-सूत्राभ्याम्- अन्वितं शूल-पाणिकम्। ज्वलन्तं पिंगल-जटा, शिखाम्-उद्योत-कारिणम् ।3। अमृतेना-प्लुतं हृष्टम्-उमादेहार्ध, धारिणम्। दिव्य-सिंहा-सनासीनं, दिव्य-भोग-समन्वितम् ।4। दिक्-देवता-समायुक्तं, सुरासुर- नमस्कृतम्। नित्यं च शाश्वतं शुद्धं, ध्रुवम्-अक्षरम्- अव्ययम् ।5। सर्व-व्यापिनम्-ईशानं, रुद्रं वै विश्व-रूपिणम्। एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक्-ततोयजनम्-आरभेत्- ।6। मृत्युंजय महादेव, पाहि मां शरणागतम्। जन्म-मृत्यु- जरारोगैः, पीडितं भव-बन्धनात् ।7। आराधितो मनुष्यै-स्त्वं, सिद्धै-र्देवै-महर्षिभिः। आवाहयामि भक्त्या त्वां गृहणार्चां महेश्वर ।8। हर शम्भो महादेव, विश्वेशा-मरवल्लभ, शिव-शंकर सर्वात्मन्, नीलकण्ठ नमोस्तु ते ।9। इति विज्ञाप्य देवेशं

जपेत्-मन्त्रं च त्र्यम्बकम् ।10। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं रयि-पोषणम् उर्वारुकम्-इव बन्धनात्- मृत्यो-र्मुक्षीय मामृतात् ।11।

ॐ आत्वा वहन्तु हरयः- सचेतसः, श्वेतैर-अश्वैर्-इह केतुमद्भि-र्वाता जवेन, बलमद्भि-र्मनो-जवा, यांतु शीघ्रं, मम रुद्राय, हव्यं-देवानां च-ऋषीणां, चासुराणां, च पूर्वजं, सहस्राक्षं, विरूपाक्षं, विश्वरूपं महादेवं शिवम्-आवाहया-म्यहम्। आवाहयाम्यहं देवं-ईश्वरं पार्वती-पतिम्। वृषभासनम्-आरूढं, नागाभरण-भूषितम्। प्रीयतां यजमानस्य तुष्टो भूयात्-जगत्-पतिः शुक्लवर्णो महातेजाः, शुक्लस्रक्-दाम भूषितः। बलिः पुष्पं चरुश्चै व धूपोयं प्रतिगृह्यताम्। ॐ तत्-पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि। तत्-नोरुद्रः प्रचोदयात् ।3। यह मन्त्र तीन बार पढ़िये तर्पण कीजिये - ॐ शत्-रुद्रियं-देवानां रुद्रशमनं भवाय शीवर्यश्च प्रत्युत-क्रान्तानुवाकौ देवर्षी रुद्र-दैवत्यः-त्रिष्टुप्-छन्दश्चयने विनियोगः नमस्ते देवा रौद्रम्-आनुष्ठुभम्-आद्या गायत्री-पंचम-षष्ठ्यौ पांक्त्यन्ता, महापंक्ति-र्मा भैर्-एकपदा, जगती-अनु-ष्टुप् त्रिष्टुप् महाबृहती, यवमध्या रूद्रोदेवता, चरुमेष्टिका, अस्य रुद्रस्य प्रशनस्य अनुष्टुप्-छन्दः अघोर ऋषि संकर्षण-मूर्ति सुरुपो, यो-असौ आदित्यः परः पुरुषः स एव देवता, अग्निः क्रतु-चरु-माया-मिष्टिकायां शत-रुद्रे विनियोगः, सकलस्य रुद्राध्यायस्य श्रीमहारुद्रो देवता एकागायत्री छन्द-स्तिस्रो-अनुष्टुभ-स्तिस्रः पंक्त्यः,

सप्तानुष्टुभौ द्वे जगत्यौ परमेष्टी-ऋषि, आत्मनो वाङ्-मनः कायोपार्जित-पापनिवार-णार्थं-सर्वकामना-सिद्धार्थे रुद्र-मन्त्र (पाठे) (होमे) (स्नाने) पुष्पार्चने (वा) विनियोगः। ॐ कर्पूर-गौरं करुणा-वतारं संसार-सारं, भुजगेन्द्रहारम्। सदा रमन्तं, हृदयार-बिन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि।

रुद्रमन्त्र

यजुर्वेद से

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः ।1।

या ते रुद्र शिवा तनूर-घोराऽपापकाशिनी
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरि-शन्ताभि-चाकशीहि ।2।

यामिषु गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः पुरुषं जगत् ।3।

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छां वदामसि।
यथा नः सर्वम्-इत्-जगत्-अयक्ष्म सुमना असत् ।4।

अध्यवोचत्-अधि-वक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहीन्-च सर्वाम्-जम्भयन्-सर्वान्-च यातु-धान्योऽधराचीः परासुव ।5।

असौ यस्ताम्रो-अरुण उत बभ्रुः सुमंगलः।
ये चैनं रुद्रा- अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषां हेड ईमहे ।6।

असौ योऽवसपति नीलग्रीवो विलोहितः ।
उतैनं गोपा अदृशन्-अदृशन्-उदहार्य्यः स इष्टो मृडयाति नः ।7।

नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽ-हन्तेभ्यो अकरन्नमः ।8।

प्रमुंच धन्वनस्त्वम्-उभयोर्-अत्न्यों-ज्याम्।
याश्च-ते हस्त इषवः परा ता भगवो पव ।9।

विज्यन्-धनुः कपर्द्दिनो विशल्यो बाणवान्।
उत अन्नेशन्नस्य या इषव आभुर्-अस्य निषंगधिः ।10।

या ते हेतिर्-मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः
तयास्मान्-विश्वतस्त्वम्-अयक्ष्मया परिभुज ।11।

परि-ते धन्वनो हेतिर्-अस्मान्-वृणक्तु विश्वतः
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मिन्-निधेहि-तम् ।12।

अवतत्य धनुष्ट्वं सहस्राक्ष शते शुधे।
निशीर्य शल्यानाम्-मुखा शिवो नः सुमना भव ।13।

नमस्ते आयुधाया-नातताय धृष्णवे
उभाभ्याम्-उत ने नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने ।।14।।

मानो महान्तम्-उतमा नो अर्भकम्मा न उक्षन्तमुत मान उक्षिन्तम्।
मानो वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ।15।

मा नस्तो-के तनये मान आयुषि मा नो गोषु
मानो अश्वेषु रीरिषः मानो वीरान्न-रुद्रभामिनो
वधी-र्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे ।16।

नमो हिरण्य बाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमो,
नमो वृक्षेभ्यो हरि केशेभ्यः पशूनां पतये नमो नमः।
शष्पिजंराय त्विषीमते पथीनां पतये नमो नमो,
हरिकेशायोप-वीतिने पुष्टानां पतये नमः ।17।

नमो बम्लुशाय व्याधिनेऽन्नानां पतये नमो,
नमोभवस्य हे-त्यै जगतां पतये नमो।
नमो रुद्राय-आत-तायिने क्षेत्राणां पतये नमो,
नमः सूताया हन्त्यै वनानां पतये नमः ।18।
नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो,
नमो भुवन्तये वारि-वस्कृताय-औषधीनां पतये नमो,
नमो मंत्रिणे वाणिज्याय कक्षाणां पतये नमो,
नम उच्चैघोषाया क्रन्दयते पत्तीनां पतये नमः ।19।
नमः कृत्सनायतया धावते सत्वानां पतये नमो,
नमः सहमानाय- निव्याधिने-आव्या-धिनीनां पतये नमो,
नमो निषंगिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो,
नमो निचेर-वे परिचराया-रण्यानां पतये नमः ।20।
नमो वंचते परिवंचते स्तायूनां पतये नमो,
नमो निषंगिने इषुधिमते तस्कारणां पतये नमो,
नमः सृकायिभ्यो जिघांसदभ्यो मृष्णतां पतये नमो
नमोऽसिमद्भ्यो नक्तं चरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः । 21।
नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलचांनां पतये नमोः
नम इषु-मद्भ्यो धन्वा-यिभ्यश्च वो नमो,
नम आतन्वानेभ्यः प्रति-दधानेभ्यश्च वो नमो
नम अयच्छद्भ्यो ऽस्यभ्द्भ्यश्च वो नमः ।22।
नमो विसृजिभ्दयो विद्धयभ्यश्च वो नमोः,
नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो,
नमः शयानेभ्य आसीनेभ्यश्च वो नमो
नमस्तिष्ठद्भ्यश्च धावद्भ्यश्च वो नमः ।23।

नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो
नमोऽश्वभ्यो-अश्वपतिभ्यश्च वो नमो
नम आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमोः,
नम उगणाभ्य-स्तृंहती-भ्यश्च वो नमः ।24।

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो,
नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो,
नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो,
नमो विरूपोभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ।25।

नमः सेनाभ्य सेनानिभ्यश्च वो नमो,
नमो रथिभ्यो-अरथेभ्यश्च वो नमो,
नमः क्षत्तृभ्यः संगृहीतृभ्यश्च व नमो,
नमो महद्भ्योऽर्भकेभ्यश्च वो नमः ।26।

नम-स्तक्षेभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमोः,
नमः कुलालेभ्यः कमरिभ्यश्च वो नमो,
नमो निषादेभ्यः पुंजिष्ठेभ्यश्च वो नमो,
नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः ।27।

नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो,
नमो भवाय च, रुद्राय च नमः
शर्वायच पशुपतये च, नमो
नील-ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च ।28।

नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय न, नमः
सहस्त्राक्षय च, शत-धन्वने च नमो
गिरिशयाय च, शिपिविष्ठाय च,
नमो मीढुष्टमाय चे-षुमते च ।29।

नमो हृस्वाय च वामनाय च, नमो बृहते च वर्षीयसे च,
नमो वृद्धाय च सवधे च, नमोऽग्रयाय च प्रथमाय च ।30।
नम आशवे चा जिराय च, नमः शीघ्रयाय च शीभ्याय च,
नम उर्म्याय चावस्वन्याय न, नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ।31।
नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च, नमः पूर्वजाय चा परजाय च,
नमो मध्यमाय चाप्रगल्भाय च, नमो जगन्याय च बुध्न्याय च ।32।
नमः सोम्याय च प्रतिसर्य्याय च, नमो याम्याय च क्षेम्याय च,
नमः श्लोक्याय चा वसान्याय च, नमः उर्व्वर्याय च खल्याय च ।33।
नमो वन्याय च कक्ष्याय च, नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च,
नम आशुषेणाय चाशुरथाय च, नमः शूराय चावभेदिने च ।34।
नमो विल्मिने च कवचिने च, नमो वर्मिणे च वरूथिने च,
नमः श्रुताय च, श्रुतसेनाय च, नमो दुन्दभ्याय चा हनन्याय च ।35।
नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च, नमो निषंगिणे चेषुधिमते च,
नमस्ती-क्ष्णेषवे चा युधिने च नमः स्वायुधाय च, सुघन्वने च ।36।
नमः स्रुत्याय च पथ्याय च, नमः काट्याय च नीप्याय च,
नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च ।37।
नमः कूप्याय चावट्याय च, नमो बोध्याय चातप्याय च,
नमो मेध्याय च विद्युत्याय-च नमः वर्ष्याय चावर्ष्याय च ।38।
नमो वात्याय च रेष्म्याय च, नमो वास्तव्याय च, वास्तुपायच,
नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च ।39।
नमः शंगवे च पशुपतये च, नम उग्राय च भीमाय,
नमोऽग्रेवधाय च, दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे,
नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय ।40।

नमः शम्भवाय च मयो भवाय च, नमः शंकराय च
मयस्कराय च, नमः शिवाय च शिवतराय च ।41।

नमः पार्याय चावार्याय च, नमः प्रतरणाय चोतरणाय च,
नमस्ती-ध्यार्य च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च ।42।

नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च, नमः किंशिलाय च क्षयणाय च,
नमः कपर्दिने च पुलस्तये च, नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च ।43।

नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च, नमस्तल्प्याय च गेह्याय च,
नमो हृदययाय च निवेष्याय च नमः काट्याय च गह्वारेष्ठाय च ।44।

नमः शुष्क्याय च हरित्याय च, नमः पाँसव्याय च रजस्याय च,
नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऊर्व्याय च सूर्व्याय च ।45।

नमः पर्णाय च पर्णशदाय च, नम उद्गुर-माणाय चा-भिघ्नतेच,
नम आखिदते च प्रखिदते च विचिन्वत्केभ्यो
नमो विक्षिणत्केभ्यो नम-आनिर्हतेभ्यः ।46।

द्रापे-अन्धसरस्पते दरद्रि नीललोहित।
आसां प्रजाना-मेषां पशूनां,
माभेर्मा रोङ् मोच नः किंच नाममत् ।47।

इमा रुदाय तवसे कपर्दिने-क्षयत्-वीराय प्रभरामहे मतीः यथा शमसत्
द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे-अस्मिन्- अनातुरम् ।48।

या ते रुद्र शिवा तूनः शिवा विश्वाहा भेषजी,
शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे ।49।

परि नो रुद्रस्य हेति-र्वृणक्तु परित्वेषस्य दुरमतिर्-अघायोः।
अव-स्थिरा मघवभ्दयस्तनुष्व मीव्दस्तोकाय मृड ।50।

मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भवः। परमे वृक्ष-आयुधं
निधाय कृत्तिं वसान-आचर पिनाकम्बिभ्रत्-आगहि ।51।
विकिरिद्र विलोहित नमस्ते-अस्तु भगवः।
यास्ते सहस्रं हेतयो-अन्यम्-अस्मत्-निवपन्तु ताः ।52।
सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा-कृधि ।53।
असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा-अधिभूम्याम्-तेषां
सहस्र-योजनेव धन्वानि तन्मसि ।54।
अस्मिन्-महत्यर्णवे-अन्तरिक्षे भवा-अधि,
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ।55।
नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवं रुद्रा-उपाश्रिताः,
तेषां सहस्र-योजनेव धन्वानि तन्मसि ।56।
नीलग्रीवाः शितिकण्ठां शर्वा अधः क्षमाचराः,
तेषां सहस्र-योजनेव धन्वानि तन्मसि ।57।
ये वृक्षेषु शष्पिजंरा नीलग्रीवा विलोहिताः,
तेषां सहस्र-योजनेव धन्वानि तन्मसि ।58।
ये भूतानाम्-अधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः
तेषां सहस्र-योजनेव धन्वानि तन्मसि ।59।
ये पथां पथि-रक्षय ऐलवृद्धा-आयुर्युधः,
तेषां सहस्र-योजनेव धन्वानि तन्मसि ।60।
ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषंगिणः
तेषां सहस्र-योजनेव धन्वानि तन्मसि ।61।

ये-अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिवतो जनान्।
तेषां सहस्र-योजनेव धन्वानि तन्मसि ।62।

य एतावन्तश्च भूयाँसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे,
तेषां सहस्र-योजनेव धन्वानि तन्मसि ।63।

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षम्-इषवः
तेभ्यो दश, प्राचीर्दश दक्षिणा-दश प्रतीची-दश-उदीची
दर्शोर्ध्वाः तेभ्यो नमो-अस्तु तेनोवन्तु तेनो मृडयन्तु
ते यं द्विष्मो यश्चनो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः।64।

नमोस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात-इषवः तेभ्यो दश,
प्राचीदर्श, दक्षिणा दश, प्रतीची-दर्श-उदीचीर्दशो,
र्ध्वाः तेभ्यो नमोऽस्तु तेनो वन्तु ते नो मृडयन्तु
ते यं द्विष्मो यश्चनो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः।65।

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषाम्-अन्नम्-इषवाः
तेभ्यो दश, प्राचीदर्श दक्षिणा दश प्रतीची-दर्श र्दशोध्वः
तेभ्यो नमोऽस्तु ते नोवन्तु तेने मृडयन्तु तेयं
द्विष्मो यश्चनो द्वेष्टि तमोषां जम्भे दध्मः ।66।

यदि इस **"रुद्रमन्त्र"** का प्रयोग यज्ञ में हो तो **"तेजोसि, शुक्रमसि, ज्योतिरसि"** कर के पूर्णाहुति डालते हुये पढें :-

ॐ यो रुद्रो अग्नौ य अप्सु य ओषधीषु यो वनस्पतिषु, यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमोऽस्तु देवाः।।

तर्पण करते हुये पढें :- मद्यं पीत्वा गुरुदारंश्च गत्वा ? स्तेयं कृत्वा ब्रह्महत्यां विधाय। भस्मच्छन्नो भस्म-शय्यां शयानो रुद्राद्ध यायी मुच्यते सर्वपापैः।। नित्यं दण्डी नित्य-यज्ञोपवीती नित्यं ध्वात्वा भस्मना कर्मबन्धी, रुद्रं दृष्ट्वा। देवम्-ईशानं-उग्रं

याति स्थानं तेन साकं तदीयं अनेन मन्त्र-होमेन आत्मनो वाक्-मनः कायोपार्जित-पाप-निवारणार्थं-सर्वकामना सिद्धयर्थं (शिव-प्रीत्यर्थं, भगवान्) भवः- देवः, शर्वः - देवः, रुद्रः - देवः, पशुपतिः - देव, उग्रः - देवः, महादेवः भीमः- देवः, ईशानः - देवः, शतरुद्रेश्वरः मृत्युजंय-भट्टारकः पार्वती सहितः, परमेश्वरः प्रीयतां प्रीतोऽस्तु।

चमानुवाक्यम्

(ध्यान)

गात्रं भस्मसितं सितं च हसितं हस्ते कपालं सितं, खट्वागंच सितं, सितं च वृषभं कर्णे सिते कुण्डले। गंगाफेनसितो जटा-जलसितश्चन्द्रः सितो मुर्ध्नि, सोयं सर्वसितो ददातु विभवं पापक्षयं शंकरः।

यजुर्वेद की अठारवीं "अध्याय से उद्धृत"

वाजश्च मे, प्रसवश्च मे, प्रयतिश्च मे,
प्रसितिश्च मे, धीतिश्च मे, क्रतुश्च मे, स्वरश्च मे,
श्लोकश्च मे, श्रवश्च मे, श्रुतिश्च मे, ज्योतिश्च मे,
प्राणश्च मे, यज्ञेन कल्पन्ताम् ।1।

प्राणश्च मे, अपानश्च मे, व्यानश्च मे,
असुश्च मे, चित्तं च मे, आधीतं च मे, वाक् चमे,
मनश्च मे, चक्षुश्च मे, श्रोत्रं च मे, दक्षश्च मे,
बलं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।2।

ओजश्च मे, सहश्चमे, आत्मा च मे, तनूश्च मे,
शर्मच मे, वर्म च मे, अंगानि च मे, अस्थीनिच मे,
परुँषि च मे, शरीराणि च मे, आयुश्च मे,
जराच मे, यज्ञेन कल्पन्ताम् ।3।

ज्येष्ठ्यं च मे, आधिपत्यं च मे, मन्युश्च मे, भामश्च मे,
अमश्च मे, अम्भश्च मे, जेमा च मे, महिमाच मे,
वरिमाच मे, प्रथिमा च मे, वर्षिमाच मे, द्राघिमाच मे,
वृद्धं च मे, वृद्धिश्च मे, यज्ञेन कल्पन्ताम् ।4।

सत्यं च मे, श्रद्धा च मे, जगत्-च मे, धनंचमे,
विश्वं च मे, महश्च मे, क्रीडा च मे मोदश्च मे,
जातं च मे, जनिष्यमाणं च मे, सूक्तं च मे,
सुकृतं च मे, यज्ञेन कल्पन्ताम् ।5।

ऋतं च मे, मेऽमृतं च मे, अयक्ष्मं च मे,
अनामयत्-च मे, जीवतुश्च मे, दीर्घायुत्वं च मे,
अनमित्रं च म, अभयं च मे, सुखं च मे, शयनं च मे,
सूषाश्च मे, सुदिनं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।6।

यन्ता च मे, धर्ता च मे, क्षेमश्च मे, धृतश्चि मे,
विश्वं च मे, महश्च मे, संवित्- च मे, ज्ञात्रम्-च मे,
सूश्चमे, सीरंच मे, लयश्च मे, यज्ञेन कल्पन्ताम् ।7।

शं च मे, मयश्च मे, प्रियं च मे, अनुकामश्च मे,
कामश्च मे, सौमनसश्च मे, भगश्च मे,
द्रविणं च मे, भद्रंच मे, श्रेयश्च मे, वसीयश्च मे,
यशश्च मे, यज्ञेन कल्पन्ताम् ।8।

ऊर्क् च मे, सूनृता च मे, पयश्च मे,
रसश्च मे, घृतं च मे, मधु च मे, सग्धिश्च मे,
सपीतिश्च मे, कृषिश्च मे, वृष्टिश्च मे,
जेत्रं च म, औद्भिद्यं मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।9।

रयिश्च मे, रायश्च मे, पुष्टंच मे, पुश्टिश्च मे,
विभुच मे, प्रभु च मे, पूर्णचं मे, पूर्णतरं च मे,
कुयवं च मे, अक्षितं च मे, अन्नं च मे,
अक्षुत् च मे, यज्ञेन कल्पन्ताम् ।10।

वित्तंच मे, वेद्यं च मे, भूतंच मे,
भविष्यत्-च मे, सुगंच मे, सुपथ्यं च मे,
ऋद्धिं च मे, क्लृप्तं च मे, क्लृप्तिश्च मे,
मतिश्च मे, सुमतिश्च मे, यज्ञेन कल्पन्ताम् । 11 ।

व्रीहयश्च मे, यवाश्च मे, माषाश्च मे, तिलाश्च मे,
मुद्गाश्चमे, खल्वाश्च मे, प्रियंगवश्च मे,
अणवश्च मे, श्यामाकाश्च मे, नीवाराश्च मे,
गोधूमाश्च मे, मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।12।

अश्मा च मे, मृत्तिकाच मे, निरयश्च मे,
पर्वताश्च मे, सिकताश्च मे, वनस्पतयश्च मे,
हिरण्यं च मे, अयश्च मे, श्यामं च मे, लोहं च मे,
सीसंच मे, त्रपुच मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।13।

अग्निश्च मे, आपश्च मे, वीरुद्धधश्च मे,
ओषधयश्च मे, कृष्टपश्च मे,
आकृष्टपश्च मे, भूतं च मे,
भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।14।

वसूच मे, वस्तिश्च मे, कृम् च मे, शक्तिश्च मे,
अर्थश्च मे, यमश्च मे, इत्याश्च मे,
गतिश्च मे, यज्ञेन कल्पन्ताम् ।15।

अग्निश्च म, इन्द्रश्च मे, सोमश्च म-इन्द्रश्च मे,
सविताचम-इन्द्रश्चमे, सरस्वती च म
इन्द्रश्च मे, पूषा च म -इन्द्रश्च मे, बृहस्पतिश्च म
इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।16।

मित्रश्चम-इन्द्रश्च मे, वरुणश्च म-इन्द्रश्च मे,
धाता च म-इन्द्रश्च मे, त्वष्टा च म-इन्द्रश्च मे,
मरुतश्च म-इन्द्रश्च मे, विश्वे च मे
देवा-इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।17।

पुथिवी च म-इन्द्रश्च म, अन्तरिक्षं च म-इन्द्रश्च मे,
द्यौश्चम-इन्द्रश्च मे, समाश्चम इन्द्रश्च मे,
नक्षत्राणि च म-इन्द्रश्च मे, दिशश्च म
इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।18।

अंशुश्च मे, रिश्मश्च मे, अदाभ्यश्च मे, अधिपतिश्च म,
उपांशुश्च मे, अन्त-र्यामश्च मे, शुक्रश्च मे,
मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।19।

आग्रायणश्च मे, वैश्व देवश्च मे, ध्रुवश्च मे, वैश्चानरश्च मे,
ऐन्द्राग्रश्च मे, महावैश्देवश्च मे, मारुत्वतीयाश्च मे,
निष्केवल्यश्च मे, सावित्रश्च मे, सार-स्वतश्च मे,
पात्नीवतश्च मे, हारि-योजनश्च मे यज्ञेनकल्पन्ताम् ।20।

सुरश्च मे, चमसाश्च मे, वायव्यानि च मे,

द्रोणकलश्च मे, ग्रावाणश्च मे अधिषवणे च मे,

पूतभृत् च मे, आधवनीयश्च मे, वेदिश्च मे, बर्हिश्च मे,

अवभृथश्च मे, स्वगाकारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।21।

अग्निश्च मे, धर्मश्च मे, अर्कश्च मे, सूर्यश्च मे,

प्राणश्च मे, अश्वमेधश्च मे, पृथिवी च मे,

आदि-तिश्च मे, दितिश्च-मे, द्यौश्च मे,

अंगुलय: - शक्वरयो दिश्च-मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।22।

व्रतं च म, ऋतश्च मे, तपश्च मे, संवत्सरश्च मे,

अहोरात्रे उर्वष्टीवे बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।23।

एका च मे, तिस्रश्च मे, तिस्रश्च मे, पंच च मे, पंचच मे,

सप्तच मे, सप्तच मे, नवचमे नव च म, एकादश चमे,

एकादश चमे त्रयोदश च मे, त्रयोदश चमे, पंचदश च मे,

पंचदश च मे, सप्तदश च मे, सप्तदश च मे, नवदश च मे,

नवदश च म, एकाविंशतिश्च म, एकाविंशतिश्च मे,

त्रयोविंशतिश्च मे, त्रयोविंशतिश्च मे, पंचविंशतिश्च मे,

पंचविंशतिश्च मे, सप्तविंशतिश्च मे, सप्तविंशतिश्च मे,

सप्तविंशतिश्च मे, नवविंशतिश्च मे, नवविंशतिश्च मे,

एकत्रिशंत्-त्रंम, एकत्रिं-शत् च मे,

त्रयस्त्रिं शत्-च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।24।

चत्स्रश्च मे, ऽष्टौ चमे,-अष्टौ च मे, द्वादश च मे,

द्वादश च मे, षोडश च मे, षोडशच्र मे, विंशतिश्च मे,

विंशतिश्च मे, चतुर्वि शतिश्च मे, अष्टाविंतिश्च मे,
अष्टाविंशतिश्च मे, द्वात्रिंशत् च मे, द्वात्रिंशत् च मे,
षट्त्रिंशत् च में, षट्त्रिंशत् च मे, चत्वारिंशत् च मे,
चत्वारिंशत् च मे, अष्टा चत्वारिंशत् च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।25।

त्र्यविश्च मे, त्र्यवी च मे, दित्यवाट् च मे, दित्यौही च मे,
पंचाविश्च मे, पंचावी च मे, त्रिवत्सश्च मे, त्रिवत्सा च मे,
तुर्यवाट् च मे, तुयौही च मे, यज्ञेन कल्पन्ताम् ।26।

पष्ठवाट् मे, पष्ठौही च म, उक्षा च मे, वशा च म, ऋषभश्च मे, वेहत्-च मे, अनड्वाँश्च मे, धेनुश्च मे, यज्ञेन कल्पन्ताम् ।27।

वाजाय स्वाहा, प्रसवाय स्वाहा, ऽपिजाय स्वाहा, क्रतवे स्वाहा, वसवे स्वाहा, अर्हप तये स्वाहा-अह्ने मुग्धाय स्वाहा, मुग्धाय वैनंशिनाय स्वाहा, विनंशने-आन्तायायनाय स्वाहा, अन्ताय भौवनाय स्वाहा, भुवनस्य पतये स्वाहा, अधिपतये स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा। इयं ते राट्-मित्राय यमन ऊर्जे त्वा वृष्टयै त्वा प्रजानां त्वाधिपत्याय ।28।

आयु-यज्ञेन कल्पतां, प्राणो यज्ञेन कल्पतां, चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां, श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां, वाक्-यज्ञेन कल्पतां, मनो यज्ञेन कल्पतां, आत्मा यज्ञेन कल्पतां, ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां, ज्योतिर्यज्ञेन कल्पतां, स्वर्यज्ञेन कल्पतां, पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां, यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्। स्तोमश्चयजुश्च ऋक्च सामच, बृहच्च, रथन्तरं चं। स्वर्देवा-अगन्म-अमृता-अभूम प्रजापते: प्रजा-अभूम वेट्स्वाहा ।29।

वाजस्य नु प्रसवे मातारं महीम्-अदितं-नाम
वचसा करामहे, यस्यामिदं विश्वं भुवनम्-आविवेश
तस्यान्नो देवः सविता धर्म्म साविषत् ।30।

विश्वे-अद्य मरुतो विश्व-ऊती विश्वे भवन्तवगन्यः
समिद्धाः विश्वे नो देवा-अवसा-आगमन्तु
विश्वम्-अस्तु द्रविणं वाजो-अस्मे ।31।

वाजो नः सप्त प्रदिशश्चतस्त्रो वा परावतः,
वाजो नो विश्वै-र्देवै-र्धनसातौ-इहावतु ।32।

वाजो नो-अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवाँ ऋतुभिः
कल्पयाति वाजोहिमा सर्ववीरं जजान विश्वा
आशा वाजपति-र्जजयेम् ।33।

वाजा पुरस्तात्-उत मध्यतो नो वाजो दैवान् हविषा
वृद्धयाति वाजोहि मा सर्ववीरं चकार
सर्वा आशा वाजपति र्भवेयम् ।34।

सं मा सृजामि पयसा पृथिण्याः सं मा-अ-द्भिः
ओषधीभिः सोहं वाजं सनेयम्-अग्ने ।35।

यज्ञ में पूर्णाहुति डालते हुये पढें :- तेजोसि

पयः पृथिव्यां पय-ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे
पयो धाः पयस्वतीः प्रदिशाः सन्तु मह्यम् ।36।

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति

विजयेश्वर कैसट्स तथा प्रकाशन

स्व. प्रेम नाथ शास्त्री की ज़बान से

विजयेश्वर प्रकाशन

अजीत कालोनी
गोल गुजराल जम्मू
Ph. : 555607